श्री चौंसठ ऋद्धि विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108

श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी मुनिराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

कृति : श्री चौंसठ ऋद्धि विधान

कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी

सप्तम् संस्करण : 2100 प्रतियाँ

प्रकाशन वर्ष : 2025

न्यौछावर राशि : 30.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website	-	www.munisuvratswastidham.com
Instagram	-	munisuvrat_swastidham
Facebook	-	munisuvratswastidham
Youtube	-	swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशममूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशममूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

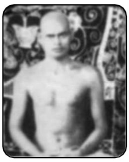

जन्म तिथि	–	कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31 अक्टूबर 1888)
जन्म स्थान	–	छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम	–	श्री केवलदास जैन
पिता का नाम	–	श्री भागचन्द जैन
माता का नाम	–	श्रीमती माणिक बाई
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1922 (वि.सं. 1979), गढ़ी, जिला-बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1923 (वि.सं. 1980), सागवाड़ा, जिला-डूंगरपुर (राजस्थान)
आचार्य पद	–	सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण	–	17 मई, 1944 (वि.सं. 2001), सागवाड़ा (राजस्थान)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज (प्रथम पट्टाचार्य)

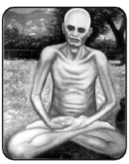

जन्म तिथि	–	कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं.1940(8 नवम्बर सन् 1883)
जन्म स्थान	–	प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम	–	श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम	–	श्री हीरालाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती गेदा बाई
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1924 (वि.सं. 1981), इन्दौर (मध्य प्रदेश)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1924 (वि.सं. 1981), देवास (म.प्र.)
आचार्य पद	–	सन् 1928 (वि.सं. 1985), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण	–	सन् 1952 (वि.सं. 2009), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विजयसागर जी महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य)

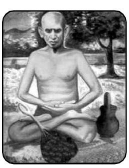

जन्म तिथि	–	माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (सन् 1881)
जन्म स्थान	–	सिरोली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम	–	श्रीमती लक्ष्मी बाई
क्षुल्लक दीक्षा	–	इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा	–	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा	–	नागौर, राजस्थान (आचार्य श्री सूर्यसागर जी से)
आचार्य पद	–	लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण	–	सन् 1962 (वि.सं. 2019), ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पूरज पूज्य आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज 'भिण्ड' (तृतीय पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	–	पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (सन् 1892)
जन्म स्थान	–	मोहिना,जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री किशोरीलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम	–	श्रीमती मथुरा देवी
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1941 (वि.सं. 1998), झालरापाटन (राजस्थान)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1943 (वि.सं. 2000), कोटा (राजस्थान)
आचार्य पद	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), हाड़ोती (राजस्थान)
समाधिमरण	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), सांगोद (राजस्थान)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य)

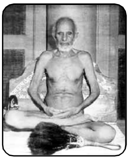

जन्म तिथि	—	आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (22 अक्टूबर, 1917)
जन्म स्थान	—	श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	—	श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम	—	श्री छिद्दूमल जैन
माता का नाम	—	श्रीमती चिरोंजी देवी
ऐलक दीक्षा	—	सन् 1968 (वि.सं. 2025), रेवाड़ी (हरियाणा)
ऐलक दीक्ष गुरू	—	आचार्य विमलसागर जी महाराज
ऐलक नाम	—	श्री वीरसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	—	सन् 1968 (वि.सं. 2025), गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
आचार्य पद	—	सन् 1973 (वि.सं. 2030), मुरैना (म.प्र.) (आचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण	—	सन् 1994 (वि.सं. 2051), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज (पंचम पट्टाचार्य)

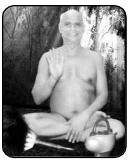

जन्म तिथि	—	अगहन वदी पंचमी, वि.सं. 2006 (10 नवम्बर 1949)
जन्म स्थान	—	बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम	—	श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम	—	श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम	—	श्रीमती सरोज देवी
क्षुल्लक दीक्षा	—	सन् 1972 (वि.सं. 2029)
मुनि दीक्षा	—	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरी सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	—	मुनि श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	—	आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद	—	सन् 1989 (वि.सं. 2046), नरवर नगर (म.प्र.)
समाधिमरण	—	सन् 2013 (वि.सं. 2070), दिल्ली

सराकोद्धारक परम पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज (षष्टम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	—	वैशाख शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2014 (1 मई, 1957)
जन्म स्थान	—	मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	—	श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम	—	श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम	—	श्रीमती अशर्फी देवी
ब्रह्मचर्य व्रत	—	सन् 1974 (वि.सं. 2031)
क्षुल्लक दीक्षा	—	सन् 1976 (वि.सं. 2033), सोनागिरि स्द्धिक्षेत्र
क्षु. दीक्षा गुरू	—	आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम	—	क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	—	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	—	मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	—	आचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद	—	सन् 1989 (वि.सं. 2046), सरधना (मेरठ)
आचार्य पद	—	सन् 2013 (वि.सं. 2070), बड़ागाँव (बागपत)

परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि	—	1-11-1969
जन्म स्थान	—	सिवनी, जिला-छिंदवाडा (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	—	संगीता (गुड़िया)
पिता का नाम	—	श्री मोती लाल जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम	—	श्रीमती पुष्पा रानी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
लौकिक शिक्षा	—	एम. ए. (संस्कृत)
दीक्षा गुरू	—	आ. श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान	—	24 जनवरी 1996 (इटावा)
दीक्षा नाम	—	आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

लेखिका की कलम से

वर्तमान में जिसे विज्ञान के चमत्कार कहे जाते हैं प्राचीन काल में वही कार्य ऋद्धि-सिद्धियों के द्वारा होते थे। आज का वैज्ञानिक मशीनों से कार्य करता है, प्राचीन काल में यह प्रक्रिया स्वाधीन थी अर्थात् तपस्या से जो ऋद्धियां प्राप्त होती हैं उनके द्वारा होते थे। आज यदि लाइट न हो तो सारी मशीन बेकार हैं पर पूर्व में अतिशय पराधीन नहीं थे।

अद्भुत अतिशय शक्तिमान, तपस्या के धनी विशेष प्रज्ञा के धारी मुनिराज यदि करूणा की निगाहों से देखें तो अतिशय, यदि आहार लें, तो अतिशय, यदि बोले तो अतिशय, धर्म की शक्ति से अतिशय की बरसात होती है। औषध ऋद्धिधारी मुनिराज का शरीर तो चिकित्सालय बन जाता है अर्थात् उनके शरीर का मल भी औषध का कार्य करता है। उनके शरीर को जो हवा छू जाती है। वह औषध बन जाती थी। काल के प्रभाव से शारीरिक, मानसिक शक्ति की कमी के कारण आज ऋद्धि सिद्धि का चमत्कार कमजोर होता जा रहा है। परन्तु आंशिक रूप में आज भी है। तपस्या जहाँ होती है वहाँ ये अवश्य होती है।

जिन को ऋद्धियां प्राप्त होती हैं उन्हें ऋषि कहते हैं, जो मौन रहते हैं, उन्हें मुनि कहते हैं, मोक्ष पथ के साधक को यति कहते हैं। ऋद्धि और सिद्धि में अंतर है। जो तपस्या से होती है सिर्फ मुनिराजों के पास होती है वह ऋद्धि है एवं जो किसी सामान्य प्राणी को अर्थात् देवी-देवता को सिद्ध करके कार्य करवाते हैं, वह सिद्धि है। दोनों में जमीन-आसमान जैसा अंतर है अर्थात् एक मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाती है और दूसरी मात्र संसार का कारण है।

मुनिराज ऋद्धि प्राप्त करने के लिए तपस्या नहीं, अपितु मैं आत्मा को कर्मों से रहित करने के लिए तपस्या करते है। पर जैसे-जैसे कर्म झड़ते है वैसे-वैसे आत्मा के गुण ऋद्धियों के रूप में प्रगट होते है। जिससे मुनिराज उन ऋद्धियों की सहायता और अधिक तप करके कर्मो का नाश करते है। तथा जो भक्त उनके चरणों को छूता है, ऋद्धियों

के प्रभाव से वो भी स्वस्थ हो जाता है।

मुनिराज ऋद्धियों का ध्यान नहीं करते उसका प्रयोग करते है। सिद्धियां इससे एकदम विपरीत होती है। इस चौंसठ ऋद्धि के व्रत करके मुनिराज की ऋद्धियों की कृपा और आशीर्वाद ग्रहण कर सकते है।

-आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

निवेदन :

परम पूज्य विदुषी लेखिका आ. स्वस्ति भूषण माताजी द्वारा रचित यह चौंसठ ऋद्धि विधान बहुचर्चित विधान है। अत्यधिक मांग होने पर इस विधान को पुनः पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

आप भी सामूहिक रूप से इस विधान को कराकर धर्मलाभ उठायें।

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है।

आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंतःकरण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में निःस्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

श्री देव शास्त्र गुरू पूजा

स्थापना

रवि केवल ज्ञान का चमक रहा, जिनके अंतर हृदय स्थल में।
तत्त्वों का ज्ञान करा करके, पहुँचा देती जो शिवपुर में।।
दुर्गम संयम पथ पर चलकर, निज आत्म ध्यान में लीन रहे,
श्री देव शास्त्र गुरू के चरणों में, हरपल मेरा ध्यान रहे।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

जग के कीचड़ में फँस कर के, जीवन को वृथा गंवा डाला।
जिनवर की वाणी ना मानी, मिथ्या को मैंने था पाला।।
अमृत जल लेकर आया हूँ, यह जन्म मरण तुम दूर करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की चिंता ने हे प्रभुवर, जीवन को चिता बना डाला।
हर पल हर क्षण मैं जलता हूँ, हृदय में उठती है ज्वाला।।
शीतल चंदन लेकर आया, मम भवाताप तुम दूर करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु घटती रहती पल पल, फिर श्वांसो की टूटी माला।
स्थिरता निज में न पाई, समता को मैंने था टाला।।
अक्षयपुर का मैं वासी बनूँ, भव व्याधि नाथ तुम दूर करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की निर्मलता नष्ट हुई, और काम भाव में उलझ गया।
कभी आतम ध्यान नहीं भाया, संसार चक्र में झुलस गया।।

मैं स्वर्ण पुष्प लेकर आया, तुम सम मुझमें वह शक्ति भरो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन में भोजन बहुत किया, पर भूख न मेरी शान्त हुई।
जिव्हा लोलुपता के कारण, जीवन चर्या दुर्भान्ति भई।।
तेरे चरणों में आया हूँ, यह भवाताप तुम दूर करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीष मम शीश धरो।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह ज्ञान दीप हो गया मद्धिम, अज्ञान अंधेरा छाया है।
तेरा मेरा करता रहता, पर हाथ नहीं कुछ आया है।।
प्रभु ज्ञान दीप की ज्योति से, मम अंधकार तुम दूर करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म बहुत दुःख देते हैं, ये बात मैं सोचा करता था।
पर खोटे कर्मों के द्वारा, पापों की गठरी भरता था।।
ये धूप समर्पित करता हूँ, मम कर्मों को तुम ध्वंस करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पुण्य पाप का फल पाता, और राग द्वेष में पड़ा रहा।
सुख दुःख को साथी बना लिया, संसार चक्र में अड़ा रहा।
मैं चर्तुगति में भटक रहा, फल मोक्ष गति तुम शीघ्र करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के घोर अंधेरे से, घबरा कर चरणों में आया।
अज्ञान मिटा दो हे प्रभुवर, नहीं और कहीं तुम-सा पाया।।
भूले-भटके भ्रमते जग को, आलोक दिखा तम दूर करो।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीश मम शीश धरो।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

देव शास्त्र गुरू गुणन को, धरूँ हृदय में धार।
श्रद्धा भक्ति भाव से, नमन करूँ शतबार।।
अरिहंत देव हैं महादेव, इनके चरणन की करें सेव।
चहुँ कर्म घातिया किये चूर, सुख दर्श ज्ञान से हुये पूर।।
छ्यालीस मूलगुण धारी हो, भव्यों के तुम उपकारी हो।
चरणों तल सुर पंकज रचाये, जय जय की ध्वनि से नभ गुंजाये।।
नर देव पशु चरणों में आये, तुम वाणी सुनकर शीश नाये।
सब बैर व्याधि क्षण में नशाये, यह चमत्कार चरणों में पाय।।
शीतल वायु और पुष्प वृष्टि, शुभ-शुभ होती जहाँ आप दृष्टि।
बतलाते हैं तत्त्वों का सार, भव्यों की नैया करें पार।।
जग में तुम महिमा है महान, हम करते हैं शत्-शत् प्रणाम।
मेरा भी पुण्योदय आया, तुम पूजन कर मन हर्षाया।।
प्रभु के मुख से हुई ओंकार, वह द्वादशांग का बना सार।
कहलायी वह माँ जिनवाणी, भव्यों की है वह कल्याणी।।
प्रभु के मुख से हुई ओंकार, वह द्वादशांग का बना सार।
कहलायी वह माँ जिनवाणी, भव्यों की है वह कल्याणी।।
निर्ग्रन्थ वेश के धारे हैं, वे गुरूवर हमको प्यारे हैं।।
वे पंच महाव्रत धारी हैं, भय क्रोध कुटिलता हारी हैं।
करें मोक्षपुरी की तैयारी, उन्हें मुक्ति सुन्दरी है प्यारी।।
रहे ज्ञान ध्यान में लीन सदा, नहीं अशुभ कर्म करते कदा।
ऐसे मुनिवर के दर्श पाये, चरणों में शत्-शत् शीश नाये।।
'स्वस्ति' करे चरणों की भक्ति, शीघ्राति शीघ्र मिल जाये मुक्ति।

दोहा

वर्णन की नहिं शक्ति है, गुण हैं अपरंपार।
श्रद्धा भक्ति भाव से, हो जाये भव पार।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरूभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिनशासन जिनदेव औ, जिन गुरू शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय।।

इत्याशीर्वादः

श्री चौंसठ ऋद्धि विधान प्रारम्भ

मंगलाचरण

मनुज लोक में आत्मा, करता है पुरुषार्थ।
पूजा भक्ति मैं करुँ, जो करती उद्धार।।

(तर्ज : हे दीन बंधु श्रीपति.......)

अरिहंत देव ज्ञान दे, अज्ञान हटाते,
जीवों को मुक्ति पंथ का, है ज्ञान सिखाते।
प्रभु नाम जो रटता रहे, मंगल सदा होता,
शुभ भाव को धरता, सदा वह पाप को खोता।।
चौबीस जिन को नित्य ही, हम शीश झुकावें,
मैं वंदना करता रहूँ, ये सौख्य बढ़ावें।
गणधर सभी उस ज्ञान को, अंतर में सजाते,
गणधर को नमन करते श्री गणेश कहाते।।
द्वादश सभा के मध्य, कमल में प्रभु बसे,
ज्ञानी की करें वंदना, शुभ ज्ञान में लसे।
निज आत्म तत्व प्राप्त हो, ये भावना मेरी,
चरणों की भक्ति मिलती रहे, भावना मेरी।।
ये ऋद्धियां प्रगटें सभी, प्रभुजी के पास में,
होते सभी अतिशय वहाँ, भक्तों की आश में।
चरणों की वंदना भी, ऋद्धि सिद्धि को देती,
ये अर्चना प्रभु वीर की, सभी कष्ट को हरती।।

हे ऋद्धियों के नाथ, साथ आपका रहे,
करते हैं नमस्कार ज्ञान, धार की बहे।
हम पूजा भक्ति के लिये, चरणों में हैं आये,
हर कार्य के प्रारम्भ में, तुम्हें शीश झुकायें।।

चौबीस तीर्थंकर एवं गणधर पूजा

स्थापना

(शंभू छंद)

हे दयावान करुणा निधान, ईश्वर तुम ही परमेश्वर हो,
हो सिद्ध शिला के वासी तुम, हे देव तुम्हीं देवेश्वर हो।
इस भरत क्षेत्र में चौबीस जिनवर, ऋद्धि सिद्धि के स्वामी हैं,
गणधर मुनिवर के चरणों में, बारंबार नमामि है।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय अत्र-अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल जग को निर्मलता देता, निर्मल निज के मैं भाव करूँ,
हूँ जन्म-जन्म का अपराधी, अब तो मैं समता भाव धरूँ।
चौबीस जिनवर गणधर मुनिवर, जल से पूजा इनकी करते,
ये कष्ट निवारक ऋद्धि देव, संकट सब भक्तों के हरते।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग अग्नि का पा करके, ज्यों पानी गर्म हो जाता है,
त्यो क्रोध कषायों के कारण, संतापित आतम होता है।
चौबीस जिनवर गणधर......

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल धोकर लाया, मोती सम सुन्दर रूप हुआ,
चरणों में अर्पित करता हूँ, अक्षय पद का है भाव हुआ।
चौबीस जिनवर गणधर मुनि की, पुष्प से पूजा हैं करते,
ये कष्ट निवारक ऋद्धि देव, संकट सब भक्तों के हरते॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय व्याकुलता उपजाती, जग इसके पीछे है दौड़ा,
भोगों में निश दिन लीन रहे, इसके पीछे निज घर छोड़ा।
चौबीस जिनवर गणधर......

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन का अंजन लगा दिया, व्यंजन रस का ही स्वाद लिया,
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, इस भोजन से बच जाये जिया।
चौबीस जिनवर गणधर......

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपर होकर दीपक की लौ, संदेश ये सबको देती है,
आलोक ज्ञान का होने पर, अज्ञान तिमिर हर लेती है।
चौबीस जिनवर गणधर......

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल सुख-दुख होता, ये कर्म ही नाच नचाते हैं,
कर्मों की इसी श्रृंखला को, प्रभु तोड़ नहीं हम पाते हैं।
चौबीस जिनवर गणधर......

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर ऋतुओं के फल ला करके, मेरा मन ललचाते रहते,
मुक्ति फल की न चाह हुई, जग में भूले भटके फिरते।

चौबीस जिनवर गणधर मुनि की, फल से पूजा हम करते हैं,
ये कष्ट निवारक ऋद्धि देव, संकट सब भक्तो के हरते हैं॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय फलंण निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम भूमि को गये आप, हम गतियों के चक्कर खाते,
मैं सिद्ध शिला में जा बैठूँ, अर्जी ले चरणों में आते।
चौबीस जिनवर गणधर......

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर चतु:षष्टि ऋद्धि धारक जिन गणधर सर्वमुनीश्वरेभ्यो परम देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

नरेन्द्र छन्द

समवशरण श्री वृषभनाथ का, यति मुनि ऋषिगण शोभे,
संकट हारी सब सुखकारी, मंगलमय सब होवे।
संकट हारी सुख के दाता, वंदन करने आये,
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजन करने आये॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथस्य वृषभसेनादि चौरासी गणधर एवं चौरासी हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजित नाथ उपदेश सुनावें, गणधर ज्ञान को धारें,
संघ के नायक कहलाते हैं, भव्यों को नित तारें।
संकट हारी सुख के दाता, वंदन करने आये,
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजन करने आये॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनस्य सिंहसेनादि नब्बे गणधर एवं एक लाख सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव भव से पार कराके, सिद्ध शिला में भेजे,
गुण गणधारी, बलधारी गुरु, नैया मेरी खेवे।

संकट हारी सुख के दाता, वंदन करने आये,
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजन करने आये।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनस्य चारूषेणादि एकसौ पाँच गणधर एवं दो लाख सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन अभिनंदन प्रभु जी से, आनन्दित जग सारा,
ऋषि मुनि यति गण शीश झुकाते, समवशरण शुभ प्यारा।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथजिनस्य वज्रनाभिआदि एकसौ तीन गणधर एवं तीन लाख सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी जग घूमा करता, सुमति-सुमति को देवें,
सच्चा पथ दिखलाते सबको, सब संकट हर लेवें।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनस्य चामरादि एकसौ सोलह गणधर एवं तीन लाख बीस हजार सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नयन कमल से लख पद्म प्रभ, हृदय कमल खिल जावे,
जिसने पूजा हृदय से प्रभु को, सच्चा सुख मिल जाये।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनस्य वज्रचामरादि एकसौ दस गणधर एवं तीन लाख तीस हजार सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौ-सौ नमन त्रिकाल हमारी, श्री सुपार्श्व भगवान,
गणधर मुनिवर श्रावक ऋषिजन, करते तुम्हें प्रणाम।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनस्य चमरबलआदि पिच्चानवे गणधर एवं तीन लाख सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र प्रभु जी चंदन बनकर, जीवन को महकाते,
सब ही भव्यों को अपने संग, मोक्षपुरी ले जाते।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनस्य दत्तादि तिरावने गणधर एवं अढ़ाईलाख सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की सुन्दरता फीकी, आपके रूप के आगे,
प्रमुदित मन से दर्शन करके, आपके पीछे भागे।
संकट हारी सुख के दाता, वंदन करने आये,
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजन करने आये॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनस्य विदर्भादि अठासी गणधर एवं दो लाख सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल प्रभु के वचन हैं शीतल, सब संताप निवारें,
देकर चंदन सी शीतलता, पाप ताप निवारे।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य अनगार आदि इक्यासी गणधर एवं एक लाख मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पराधीन संसार प्रभों, स्वाधीन सरस बन जाना,
श्री श्रेयांस जी श्रेष्ठ प्रभु हैं, राज्य वहाँ का पाना।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनस्य कुंथ्वादि सतत्तर गणधर एवं चौरासी हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय सुख के शांति विधायक, वासुपूज्य भगवान,
समोवशरण में स्थित मुनिवर, लेते प्रभु से ज्ञान।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनस्य सुधर्मादि छियासठ गणधर एवं बहत्तर हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ प्रभु ने तप करके, मल-मल कर मल धोया,
उज्ज्वल आतम को कर लीना, कर्म कलंकी खोया।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनस्य नन्दरार्यादि पचपन गणधर एवं अड़सठ हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुक्ख अनंतों पाया प्रभु ने, कर्म देह विनशायी,
इन्द्र देव आ पूजा कीनी, आत्मिक शांति पायी।
संकट हारी सुख के दाता, वंदन करने आये,
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, पूजन करने आये॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनस्य जयादि पचास गणधर एवं छियासठ हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण धर्म का पालन कीना, धर्म ध्वजा फहरायी,
राज्य छोड़ मुक्ती पद पाया, जगती सब हर्षायी।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनस्य अरिष्टादि तिरालीस गणधर एवं चौंसठ हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, त्यागा सब संसारा,
रत्नत्रय की निधि को पाकर, मिला धर्म अति प्यारा।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनस्य चक्रायुधादि छत्तीस गणधर एवं बासठ हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृपा दृष्टि कुंथु ने कीनी, किया भव्य कल्याण,
मुक्तिपथ का राही बनूं मैं, बारंबार प्रणाम।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य स्वयंभ्वादि पैंतीस गणधर एवं साठ हजार मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र देव गण अरति करते, दीप रतनमय तेरी,
अरह नाथ अरि नष्ट किये हैं, सुन लो अर्जी मेरी।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनस्य कुंथ्वादि तीस गणधर एवं पचास हजार सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल-मल धोया कर्मों का मल, स्वच्छ आत्मा कीनी,
मल्लिनाथ सम्मेद शिखर जा, मुक्ति सुन्दरी लीनी।

संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनस्य विशाखादि अठाइस गणधर एवं चालीस हजार सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि गण के तुम ईश बने थे, श्री मुनिसुव्रत नाथ,
उन्हें मुक्ति ले जाकर छोड़ा, मैं भी झुकाऊँ माथ।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनस्य मल्ल्यादि अठारह गणधर एवं तीस हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमस्कार में चमत्कार है, भाव सहित जो करते,
क्रोध कुटिलता तज कर के वे, पाप कर्म को हरते।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनस्य सोमादि सत्रह गणधर एवं बीस हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया धर्म करूणा के सागर, दया की शिक्षा दीनी,
राजुल मन वैराग्य जगाकर, मुक्ति सुंदरी लीनी।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनस्य वरत्तादि ग्यारह एवं अठारह हजार सर्व मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्थर पानी ओला शोला, क्षमा धर्म को धारा,
पारस सबको प्यारे लगते, हमने तन मन वारा।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनस्य स्वयंभ्वादि दश गणधर एवं षोडश सहस्त्र सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ प्रत्यक्ष आत्म का दर्शन, हो गया केवलज्ञान,
कर्मों की तोड़ी जंजीरें, महावीर भगवान।
संकट हारी सुख के दाता...

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनस्य गौतमादि ग्यारह गणधर एवं चौदह हजार सर्वमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

तीर्थंकर चौबीस को, सदा नमाऊँ माथ।
गणधर ऋद्धि सिद्धि दो, पकड़ो मेरा हाथ।।

।। पद्धरि।।

जय ऋषभदेव अंतर्यामी, जय अजितनाथ सबके स्वामी।
जय संभव भव के हैं हर्ता, जय अभिनंदन आनंद करता।।
जय सुमति ज्ञान का दीप जला, जय पद्म सरोवर ज्ञान भरा।
जय-जय सुपार्श्व से हमें आश, जय चन्द्र प्रभु करें कर्म नाश।।
जय पुष्पदंत हैं महासंत, जय शीतल देते मुक्ति कंत।
जय-जय श्रेयांस हैं श्रेष्ठ अंश, जय वासुपूज्य का चला वंश।।
जय विमल-विमल उपदेश करें, जय-जय अनन्त निज धर्म धरें।
जय धर्मनाथ का हमें साथ, जय शांति दिखावें धर्म पाथ।।
जय कुंथु जीव रक्षा करते, जय अरह नाथ संकट हरते।
जय मल्लिनाथ अघ मल धोया, जय मुनिसुव्रत व्रत को बोया।।
जय नमिनाथ जग में जहाज, जय नेमि चरण वंदन है आज।
जय पार्श्वनाथ जग के जिनेश, जय महावीरा जी हैं विशेष।।
चौंसठ ऋद्धि स्वयमेव आये, चौबीसों जिन को शीश नायें।
जय वृषभसेना आदि गणधर, है समवशरण में श्रेष्ठी वर।
विक्रिया ऋद्धि के हैं धारी, महिमा गाते सब नर नारी।
शुभ विपुल मति पाये संता, कर्मों को हन बने अरिहंता।
वे धर्म ध्वजा को फहरावें, अवधि की महिमा को गावें।
वे वाद विवाद कुशल होते, कर्मों का खंडन नित करते।

चौपाई

लाखों श्रावक दर्शन करते, पुण्यों से वे झोली भरते।
लाखों श्राविका साध्वी बनती, आत्माराधन वे नित करती।

यति जन चरणों में तप करते, वे खपा कर्म मुक्ती वरते।
असंख्यात सुर नर भी आते, दिव्य ध्वनि पा वे हर्षाते।
द्वादश मध्य सभा में राजे, सुंदर शोभा आपकी साजे।
धन कुबेर लक्ष्मी ले आये, प्रभु का समवशरण रचवाये।
दर्शन ज्ञान है सौख्य अनंता, चारित से पाया है पंथा।
छ्यालीस मूलगुणों के धारी, इनसे शोभा बढ़े तुम्हारी।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर।
चरण आपके गुणों में चंदन, शत्-शत् नित प्रति मेरा वंदन।

त्रिभंगी

चौबीस जिन स्वामी, अन्तर्यामी, तेरी महिमा हम गायें।
संकट हर लेवा, हो सुख देवा, दर्श तेरा पाने आये।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकराणां एक हजार चार सौ बावन गणधर एवं सप्त प्रकारीय अठाईस लाख अड़तालीस हजार समस्त मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम।।
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तपधर वन को जाये।
ऋद्धियां सिद्धियां पायकर, अघ समूह नशवाये।।

परि: पुष्पांजलिं क्षिपेत्

1. चौंसठ ऋद्धि समुच्चय पूजा

स्थापना

(गीता छंद)

देह में रह देह गत है, सु:ख दुख परमार्थ से,
केवली प्रभु के चरण, न पूजना कभी स्वार्थ से।
शुद्ध भक्ति शुद्ध भावना, औ हृदय भी शुद्ध है,
आओ प्रभो आओ विराजो, तन मन सभी पवित्र हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चौंसठऋद्धि मुनिवरेभ्यो अत्र-अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज - नीर गंध अक्षतान.......)

नीर शुची लायके, धार जल की करूँ,
जन्म जरा नाश हो, मन में भाव ये धरूँ।
ऋद्धिधर नाथ को, भाव से पूजहूँ,
ऋद्धिसिद्धि प्राप्त हो, चरण मैं नित नमूँ॥

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध चंद लावते, सुगंध जन्म पावते।
क्रोध पाप दूर हो, निजात्म में रमावते॥
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत-स्वच्छ है अखंड, ले के शालि आये हम,
चरणों की पूजा करें तो, मोक्ष पद पाये हम।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम भोग नाश हेतु, पुष्प से पूजिये,
आत्म सिद्धियां बढ़ें, कर्म को हनीजिये।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजनों का थाल ले, चर्ण में चढ़ावते,
हो दयाल हो कृपाल, भूख को मिटावते।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिकी दीप तो, बाह्य को प्रकाशता,
ज्ञान दीप जब जले, मोह कर्म नाशता।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि धूप ले के, भाव मैं ये भावता,
अष्ट कर्म नाश हो, कर्म ये सतावता।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट-मिष्ट फल मिले, लेके फल मैं आवता,
मुक्ति फल की आश है, चरण में चढ़ावता।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट ऋद्धि पूजने को, अष्ट द्रव्य लाइये,
अष्ट भूमि प्राप्त हो, सौख्य को बढ़ाइये।
ऋद्धिधर नाथ को.........

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

ऋद्धि उन्हीं के होय, घोर तपस्या जो करें।
बीज मुक्ति का बोय, अतुल्य बल और शक्ति से।।

(तर्ज : हे दीन बंधु......)

जय ऋद्धियों के नाथ, तुम्हें नमस्कार है,
तप त्याग के हो नाथ, तुम्हें नमस्कार है॥
मुनिराज घोर तप करें, तब आयें ऋद्धियां,
निज आत्मा के ध्यान से, आती हैं सिद्धियां॥1॥
वे घातिया को घात के, अरिहंत बन गये,
आई थी तभी ऋद्धियां, आनंद छा गये।
शुभ बुद्धि के हैं भेद, अठारह सभी कहे,
हैं विक्रिया के ग्यारा औ निज, कर्म को दहे॥2॥
मुनि ऋद्धि चारणा से वे, आकाश में चलें,
नौ भेद सहित हैं कही, औ जीव न मरे।
घोर तपस्या करे तब, ऋद्धि प्राप्त हो,
ये सात विध कही है, फिर बने आप्त वो॥3॥
वच काय मन को ऋद्धियां, शक्ति विशेष दे,
निज आत्मा को ध्याते औ, शांति विशेष ले।
मन शुद्ध है तन शुद्ध औ, काय शुद्ध है,
सब कर्म का करके हनन, बन जाये बुद्ध है॥4॥
तप औषधि बन ऋद्धियां, करती निरोग हैं,
सब स्वस्थ होवे जीव, भगे रोग शोक हैं।
अब अष्ट भेद औषधि, ऋद्धि के कहे हैं,
मुनिराज हमारे हरें सब, रोग शोक हैं॥5॥
हो पाप कर्म भी जहां, रस नीरसा होवे,
रस ऋद्धियां है षट विधा, जो पाप को खोवे।
सब कर्म क्षीण करने को, अक्षीण ऋद्धि है,
भरपूर सभी वस्तु हो, ये पाई सिद्धि है॥6॥
अक्षीण ऋद्धि भेद से होती हैं, दो प्रकार,
ऋषियों के चरण पूजते, मिटते सभी विकार।

निज आत्मा के ध्यान में, जो लीन हो सदा,
वे कर्म शत्रुओं को शीघ्र, देते हैं भगा॥7॥
करते तपस्या ऋद्धियों का, ध्यान न करें,
वे ऋद्धियां आके स्वयं, मुनिराज को वरें।
होती है चाह सिर्फ उन्हें, सिद्ध शिला की,
शुभ त्याग तपस्या ने उन्हें, मुक्ति दिला दी॥8॥
कृत्रिम वा अकृत्रिम की, करे अभिनंदना,
मुनिराज ऋद्धि पाके करें, तीर्थ वंदना।
वे जाये जहां होते कभी, वहां दुःख ना,
खुशियाली हो चारों तरफ, आनंद हो घना॥
हम करते नमस्कार ऐसे, मुनिराज को,
जो पार करते भव से, बनते जहाज वो।
मुनिराज वे आशीष दें, सब दुख को हरें,
सब ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हो, फिर मुक्ति को वरें॥10॥

दोहा

अष्ट भेद हैं ऋद्धि के, जो पालें मुनिराज।
तपधर कर्म को काट के, पहना मुक्ति का ताज॥

ॐ ह्रीं श्री चौंसठ ऋद्धिधारी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्तजन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम॥
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, 'स्वस्ति' कर्म नशवाये॥

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

2. बुद्धि ऋद्धि पूजा

गीता छन्द

(तर्ज : प्रभु पतित पावन....)

अविराम निर्मल तप करे, मुनि मौन व्रत को पालते।
नित ज्ञान के अभ्यास से, अज्ञानता को टालते॥
अरि कर्म का परदा हटे, बुद्धि की शुद्धि हो गई।
आव्हानन बुद्धि ऋद्धि का, पूजा से शांति मिल गई॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धिऋद्धि-धारक सर्वंऋषीवरा:! अत्र अवतर अवतर। संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट सन्निधिकरणम्।

चाल (नन्दीश्वर....)

पावन है गंगा नीर, वपु को शुद्ध करे।
मल आतम का धुल जाये, पावन भाव धरे।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी, देते ज्ञान हमें।
आतम का आनंद पाये, बारंबार नमें॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सम शीतल-भाव, चरण चढ़ावत हैं।
चंदन सम है जिन ज्ञान, हर्ष बढ़ावत हैं॥
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंड शुभ शालि, चरणों में लाऊँ।
शाश्वत पद सुख की खान, प्रभु जी मैं पाऊँ॥
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन का है कुटिल स्वभाव, नाच नचावत है।
मदनारि जयी जिनदेव, भक्ति बढ़ावत है।।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाकर रोज, भूख ना शांत करे।
हो स्वात्म सुधारस देव, कर्म को आप हरे।।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया है तम घन-घोर, दीप जलाय लिया।
जगे ज्ञान ज्योति चहुं ओर, दीप चढ़ाय दिया।।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने मारा जोर, जग भरमावत है।
अग्नी में खेऊँ धूप, कर्म खिपावत है।।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम शिव सुख के करतार, फल की भेंट करूँ।
मिल जाये शिव सुख धाम, कर्म कलंक हरूँ।।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल वसु द्रव्य मिलाय, चरणन ले आया।
अर्घ्यों का थाल सजा, मम मन हर्षाया।।
बुद्धि ऋद्धि के स्वामी.......

ॐ ह्रीं श्री अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

बुद्धि ऋद्धि ऋषिवरा, तप करते घनघोर।
ज्ञान बढ़े संयम मिले, हो शांति चहुँ ओर॥
मंडलोस्परि पुष्पांजलिं।

छंद-शंभू

(तर्ज : भला किसी का.....)

बारह तप को मुनिवर तपते, ऋद्धि अनेक उन्हें होती हैं।
षट् भेद सहित अवधिज्ञानी, मिल जाते ज्ञान के मोती हैं॥
देशावधि सर्वा परमावधि, रूपी पदार्थ दिखलाता है।
शुभ त्याग तपस्या करने से, मिल जाये मुझको साता है॥
ॐ ह्रीं अवधि-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

मन जैसा चिंतन करता है, मनःपर्यय ज्ञान बतायेगा।
टेढ़ा सीधा कैसा विचार, सब उसकी समझ में आयेगा॥
निश्चित यह ज्ञान का अतिशय है, अतिशय कारी यह आतम है।
शुभ त्याग तपस्या करने से, मिल जाता निज परमातम है॥
ॐ ह्रीं मनःपर्यय-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

हो पूर्ण प्रकाशित ज्ञान तभी, ऋद्धि केवल तब प्रगट हुई।
दर्पण वत लोकालोक दिखे, संपूर्ण आत्मा शुद्ध हुई॥
शुभ केवल ज्ञान की ज्योति जगे, भावों से अर्घ्य चढ़ाते हैं।
केवल 'कैवल्य' की आशा है, चरणों में शीश झुकाते हैं॥
ॐ ह्रीं केवल-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

शब्दों की सुंदर माला से, जब एक शब्द का ज्ञान करें।
सारा आगम प्रतिभाषित हो, सारे श्रुत का आधार बने॥
यह बीज बुद्धि है कल्पवृक्ष, भावों से अर्घ्य चढ़ाते हैं।
तप त्याग की मूरति ऋषिवर को, निशदिन हम शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं बीज-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

रखवाया एक ही कोठे में, सब अन्न मगर है अलग-अलग।
मिश्रण बिन बुद्धि में आगम, हो वास सभी का पृथक-पृथक।।
वे श्रेष्ठ धारणा के मुनिवर, उनको हम शीश झुकाते हैं।
ऋद्धि सिद्धी उपहार मिले, हम यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

हर ग्रंथों में पद हों अनेक, गुरु सिर्फ एक पद ज्ञान करे।
पूरा ग्रंथों का ज्ञान होय, ज्ञानी सबका अज्ञान हरे।।
पदानुसारिणी-ऋद्धि है, मुनिवर ऋषिवर के पास रहे।
सब ज्ञान के कारण संभव है, उनके संग ज्ञान की धार बहे।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी-श्रोतृ-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

सुनने का अतिशय है विशेष, समझे नर पशु की वाणी को।
संख्या नौ योजन दूर रहे, समझाते सब अज्ञानी को।।
अनक्षर औ अक्षर वाली, सबकी भाषा है पृथक-पृथक।
ऋषिवर को शीश झुकायें हम, जग में जाये न कहीं अटक।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृ-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

सारी दुनिया दीवानी है, रसना का रस लेती रहती।
निश दिन उपवास हैं आप करें, पर आपसे कुछ भी न कहती।
यह त्याग तपस्या का फल है, दूरास्वादन ऋद्धि मिलती।
नाना रस स्वयं ही स्वाद लहे, सुख शांति की कलियां खिलतीं।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

प्रकृति परिवर्तित होती है, ऋतुएं क्रम से ही आती हैं।
स्पर्श करें स्पर्शन का, सुख पा करके हर्षाती हैं।।
संख्या नौ योजन स्पर्शन, ऋद्धिधारी को होता है।
पूजा जो इनकी करता है, वह कठिन कर्म को खोता है।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्श-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

जग गंध-सुगंध के पाने को, भंवरे बन पुष्पों पर रहते।
कस्तूरी पाने को मानव, हिंसा करने से न डरते॥
पर ऋद्धिधारी मुनिवरजी, उत्कृष्ट क्षेत्र की गंध लहें।
सम्यक्त्व प्राप्त ऐसे ऋषिवर, चरणों में आकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं दूरगन्ध-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।

पर्वत ऊपर तप करने को, मुनिवर गिरिवर पर जाते हैं।
निज आत्म तत्व से प्रीति करें, निज आतम में हर्षाते हैं॥
उत्कृष्ट विषय कर्णेन्द्रिय का, मानुष पशु की वे वाणी सुनें।
मैं पाऊँ दूर श्रवण ऋद्धि, मुनिवर के पावन चरण नमे॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवण-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।

उत्कृष्ट क्षेत्र नेत्रेन्द्रिय का, चक्री से भी ज्यादा होता।
इन्द्रिय आंखों से कम देखे, आत्मा का अवलोकन होता॥
वे अनशन धर उपवास करें, इससे शक्ति बढ़ती जाती।
ऐसे ऋषिवर को नमन करें, चक्षु अभिव्यक्ति बढ़ जाती॥

ॐ ह्रीं दूरदर्श-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।

अविराम निरंतर तप करते, विश्राम जरा न करते हैं।
प्रज्ञा ही स्वयं विकसित होती, सूक्ष्म आगम को वरते हैं॥
प्रज्ञा के हैं धनवान गुरु, प्रज्ञा श्रमण कहलाते हैं।
इन महातपों महायोगी को, शत्-शत् हम शीश झुकाते हैं।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।

श्रुत ज्ञान का विषय अनंतों है, सब लोकाकाश को जानता है।
अष्टांग महानिमित के बल से, शुभ-अशुभ बात बतलाता है॥
अभ्र भौम स्वर व्यंजन आदी, लक्षण जिनके होते हैं।
हो स्वपर भेद विज्ञान हमें, गुरु वंदन हम नित करते हैं॥

ॐ ह्रीं अष्टांग-निमित बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।

कितना भी ज्ञानी आ जावे, पर कोई जीत नहीं सकता।
वे वाद-विवाद कुशल मुनिवर, आगे कोई न टिक सकता॥

अपनी बुद्धि उपयोग करें, झंडा जिन धर्म का फहरावें।
मैं बारंबार नमूं गुरुवर, मेरी बुद्धि भी खिल जावे।।
ॐ ह्रीं वादित्व-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।15।

नित ध्यान करें, स्वाध्याय करें, आतम प्रकाश बढ़ जाता है।
ग्यारह अंगों का ज्ञान करें, चौदह पूर्वी मन भाता है।।
श्रुत चिंतन कर श्रुत केवलि हों, निज भेद ज्ञान को पूर्ण करें।
पाऊँ ऋद्धि मैं भी ऋषिवर, हम बारंबार प्रणाम करें।।
ॐ ह्रीं चतुर्दश-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।16।

दशम पूर्व जब पूरा होता, महाविद्यायें आती हैं।
कार्य करन की आज्ञा मांगे, मुनिवर के मन भाती है।
श्रुत चिंतन कर श्रुत केवलि हों, निज भेद ज्ञान को पूर्ण करें।
पाऊँ ऋद्धि मैं भी ऋषिवर, हम बारंबार प्रणाम करें।।
ॐ ह्रीं दसपूर्वीधारक-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।17।

जड़-चेतन का ही भेद जान, आतम का रूप लखा करते।
औ ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता को जाने, आतम निजी सखा वरते।।
प्रत्येक ऋद्धि के धारी मुनि, निज भेद ज्ञान को पूर्ण करें।
पाऊँ ऋद्धि मैं भी ऋषिवर, हम बारंबार प्रणाम करें।।
ॐ ह्रीं प्रत्येकऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।18।

चौपाई

बुद्धि सम्यक ज्ञान बढ़ाय, जड़ चेतन का भेद दिखाये।
सारा आगम इसी में रहता, निज वाणी से सब कुछ कहता।।
ॐ ह्रीं अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

ऋद्धि है बुद्धि, पाऊँ सिद्धि, बारंबार प्रणाम करें।
बनूँ निर्मल ज्ञानी, आतम ध्यानी, जगती तम अज्ञान हरें।।

दोहा

चिन्मय हो चिद्रूप तुम, चिदानन्द चिद् ज्ञान।
नित्य निरंजन शुद्ध हो, बारंबार प्रणाम॥
मनुज लोक में आत्मा, कर सकता पुरुषार्थ।
पुरुषारथ की शक्ति से, पायेगा निज पाथ॥
देशावधि सर्वावधि, परमावधि ऋषिराज।
अवधि ज्ञान धारी प्रभु नमता सकल समाज॥
मन में जो भी सोचता, जानेगा यह ज्ञान।
मनःपर्यय ऋद्धि बड़ी, मिटता है अज्ञान॥
ऋजुमति विपुल मति, दो हैं इसके भेद।
जजूँ मैं भक्ति भाव से, करो कर्म के छेद॥
तिहूं लोक तिहुकाल की, देखे केवल ज्ञान।
केवल ज्ञानी आत्मा, करूँ मैं तेरा ध्यान॥
एक शब्द को जानकर, सारा आगम जान।
बीज बुद्धि इस ऋद्धि को, बारंबार प्रणाम॥
श्रेष्ठ धारणा से सहित, कोष्ठ बुद्धि का ज्ञान।
ऋद्धि सिद्धि धारी मुनि, नित प्रति करूँ प्रणाम॥
इक पद के अनुसार ही, हो पूरा जिन ज्ञान।
सरस्वती के पुत्र तुम, दो हमको वरदान॥
सुन नर पशु की वाणी को, जाने ये ऋषिराज।
संभिन्नश्रोतृ बुद्धि को, नमता सकल समाज॥
संख्या योजन दूर हो, आता है रस स्वाद।
दूरास्वादन ऋद्धि धर, देवे आशीर्वाद॥
सर्दी गर्मी वर्षा का, दूर से हो स्पर्श।
ऐसे श्री ऋषिराज का, पाऊँगा कब दर्श॥
गंध सुगंध भी आवता, चाहे वस्तु हो दूर।
हे ऋषिवर ऋषिराज तुम, दो आशीष भरपूर॥
टेलीग्राम न फोन है, दूर की सुनते बात।
ऋद्धि सिद्धि की शक्ति पा, उनका मन हर्षात्॥

जब चाहे तब वह करे, दूर दर्श का ज्ञान।
दूर दर्श यह ऋद्धि है, है पुनीत जिन ज्ञान।।
श्रुत चिंतन करते रहें, श्रुत केवलि बन जाये।
चौदह पूर्व की धार में, ज्ञानामृत बरसाये।।
एक निमित्त मिल जाये तो, आ जाये वैराग।
ऋद्धि ये प्रत्येक है, बीत गया सब राग।।
वाद विवाद में कुशल हैं, धर्म ध्वजा फहराये।
कोई भी न टिक सके, जिनवर के गुण गाये।।
ज्ञान के नित अभ्यास से, दशपूर्वी कहलाये।
श्रुत धारा अमृत बहे, आनंदामृत पाये।।
तप की नित वृद्धि करे, प्रज्ञा विकसित होय।
सूक्ष्म तत्व को जानकर, बीज ज्ञान का बोय।।
अष्ट निमित्त लक्षण लखे, लक्षण ये बतलाये।
निमित्त अष्टांग इस ऋद्धि को, शत्-शत् शीश नवायें।।

त्रिभंगी छंद

शुभ ज्ञान निखारा, लिया किनारा, पूजा करने योग्य हुए।
अर्पण जग सारा, हो निस्तारा, छूटूँ भव से चरण छुए।।

ॐ ह्रीं शुद्ध-बुद्धि-ऋद्धि-धारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्तजन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम।।
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पायेंगे, अघ समूह नशवाये।।

। इत्याशीर्वादः ।

3. चारण ऋद्धि पूजा

स्थापना

त्रिभंगी छन्द

जय गुण मणि माला, परम विशाला, दोष रहित ज्ञानी गुरुवर।
कर्मों का जाला, दुख में डाला, दोष हटाओं हे गुरुवर॥
गति चार चौरासी, हैं दुख राशि, पाया दुख घनघोर प्रभो।
आव्हानन करते, श्रद्धा धरते, तारो मुझको नाथ विभो॥

ॐ ह्रीं चारणऋद्धि-धारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र अवतर अवरत। संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं चारणऋद्धि-धारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं चारणऋद्धि-धारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो समूह ! अत्र मम सिन्नहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

छंद त्रिभंगी

गंगा जल निर्मल, स्वच्छ करे मल, ले जल चरणों में आया।
मम जन्म निवारो, मरण को टारो, झारी में जल भर लाया॥
ऋद्धि के स्वामी, गगन के गामी, गति शील मम धर्म करो।
पूजन हितकारी, संकट हारी, शुभाशीष मम शीश धरो॥

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन, ताप निकंदन, मन संतापित रहता है।
शीतलता पाऊँ, मन वच ध्याऊँ, कष्ट घनेरे सहता है॥
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा महाराजा, धर्म के काजा, पूजा अक्षय हेतु करें।
उज्ज्वल अक्षत है, धर्म का सत् है, पूजा सारे कर्म हरे॥

ऋद्धि के स्वामी, गगन के गामी, गति शील मम धर्म करो।
पूजन हितकारी, संकट हारी, शुभाशीष मम शीश धरो।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कर्म नचावे, जग भरमावे, पराधीन ये भोग करे।
प्रभु शल्य निवारक, पाप विदारक, काम भाव का रोग हरे।।
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नाना व्यंजन, डाले अंजन, मन वांछित नित खाता हूँ।
संयम न आया, नैवेद्य लाया, भोजन से मिलेगी साता है।।
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक उजियारा, गगन का तारा, अंतर तम न दूर करे।
तुम ज्ञान की ज्योति, धर्म के मोती, सम्यग्ज्ञान प्रकाश करे।।
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप निरंजन, कर्म का अंजन, कृष्ण भाव करवाते हैं।
प्रभु धूप मैं लाऊँ, अग्नी जलाऊँ, कर्म सभी हरवाते हैं।।
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर ऋतुओं के फल, हैं सब निष्फल, जग छुटकारा मिल जाये।
मुझे लगता प्यारा, मुक्ति का द्वारा, तेरा अतिशय हो जाये।।
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषियों का दर्शन, करूँ मैं अर्चन, पाप मैल सब दूर करे।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ, भाव बढ़ाऊँ, मेरे सब संताप हरे।।
ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

आतम शक्ति प्रगाढ़ है, शुभ संयम संगम महा।
आनंद चारों ओर है, अमृत चहुँ दिश में बहा।।

ॐ ह्रीं नवभेद क्रियाचारणऋद्धिधारक-सर्वंऋषीश्वरेभ्यो मण्डलोस्परि परिपुष्पांजलिं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल-छन्द)

नभ तल ऋद्धिधारी मुनिवर, नभ में चल के गमन करें।
चले बैठ के या आसन से, विविधा रूप में नमन करें।।
नभ चारण ऋद्धिधारी की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से।।

ॐ ह्रीं नभचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

धर्म अहिंसा पालन करके, ऋद्धि ऐसी पाते हैं।
जल में चलें जन्तु न मारें, नहि जग में भरमाते हैं।।
जल चारण ऋद्धिधारी की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से।।

ॐ ह्रीं जलचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

यदि चलते आकाश में वे तो, घुटने कभी न मोड़ते।
चारांगुल पृथ्वी से ऊपर, चलें धर्म न छोड़ते।।
जंघाचारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से।।

ॐ ह्रीं जंघाचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

ऋद्धि के स्वामी होकर वे, पुष्प फलों पत्ते चलते।
जरा कष्ट न होता उनको, कली फूल बनकर खिलते।।
पुष्पपत्र चारण ऋषिवर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से।।

ॐ ह्रीं पुष्पपत्रचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

तप अग्नी में इतना तपते, ईंधाग्नि बेकार है।
अग्नी में चारण करके वें, करें ऋद्धि से प्यार हैं॥
अग्नि चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से॥

ॐ ह्रीं अग्निचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

मेघों में वे बने मेघधर, शुभ ऋद्धि के नाथ हैं।
बीच मेघों के चलते हैं पर, होवे न जन्तु घात है॥
मेघा चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से॥

ॐ ह्रीं मेघचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

तंतु कोमल होता है पर, रेशा भी न टूटता।
है अतिशय तन में उनके कुछ, संयम भी न छूटता॥
तन्तु चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से॥

ॐ ह्रीं तन्तुचारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

लोक हुआ ज्योतिर्मय सारा, सूर्य चन्द्र नक्षत्र से।
काल देखकर गमन वे करते, हो आनन्दित भक्त से॥
ज्योतिष चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

वायु पंक्ति गमन हैं करते, चलते हैं आकाश में।
प्रतिक्षण ज्ञानी ध्यानी रहते, रहते न अवकाश में॥
वायु चारण ऋद्धिधर की, पूजा करते भाव से।
दुख संकट दारिद्र दूर हो, इनकी निर्मल छांव से॥

ॐ ह्रीं वायु चारण ऋद्धिधारक सर्वंऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

नभ में चलते, जल में चलते, जंघा फल अग्नि मेघों में।
तंतु चारण ज्योतिष वायु, ऋद्धि है भेद अनेकों में॥

हे योगीश्वर हे तपो निधि, करूणा निधि के भंडार हो तुम।
भक्ति के भावों से पूजें, सिद्धालय के हकदार हो तुम।।
ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।

जयमाला

दोहा

चारण ऋद्धि नित नमूं, नमूं ऋद्धिधर नाथ।
भवसागर से काढ़ लो, पकड़ो मेरा हाथ।।

पद्धरि छन्द

श्री चौबीसों जिनवर महान, उनके चरणों में है प्रणाम।
तीर्थंकर के ज्ञानी गणधर, संसार त्याग बनते तपधर।
स्वयंमेव ऋद्धियां आये पास, सेवा करके बन जाये दास।
अतिशय कारी उनका शरीर, अतिशय तप करके बने वीर।
जन्मों अनेक तप किया नाथ, तब जाकर पाया मुक्ति पाथ।
शुभ पंच महाव्रत धारे थे, वे राग द्वेष निरवारे थे।
समिति पाँचों पालन करते, पांचों इंद्रिय को वश रखते।
षट् आवश्यक में वे रहे लीन, तीनों गुप्ती पालें प्रवीण।
वे भूमि शयन कचलोंच करें, जय एक भुक्ति आहार करें।
सम्यग्दर्शन स्नान करें, वे सम्यग्ज्ञान के वस्त्र धरें।
हैं ग्रंथि रहित निर्ग्रंथ आप, सब भक्त करें मिल करके जाप।
अठबीस मूल गुण धारी हो, भोगों के नहीं भिखारी हो।
निज ज्ञान ध्यान में लीन रहें, हित मित वाणी रस धार बहें।
तुम राक्षस क्रोध को जीत लिया, नहि अभिमान ने तुम्हें छुआ।
माया की छाया दूर रहे, मन वचन काय से एक रहे।
नहि लोभ ने डाका डाला है, खोला कर्मों का ताला है।
जिन धर्म मेरा रखवाला है, तोड़ा कर्मों का जाला है।
मुनिवर वन में जा ध्यान करें, सर्दी गर्मी का कष्ट सहें।

भक्तों की तुम रक्षा करना, आशाओं की झोली भरना।
तप से ऋद्धि को प्राप्त करें, सारे कर्मों को शीघ्र हरें।
''स्वस्ति'' को है बस एक आश, हो मोक्षपुरी मेरा निवास॥

दोहा

चारण ऋद्धि मुनिवरा, भवसागर के पार।
महाव्रतों को पालकर, मिले मुक्ति का द्वार॥

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्तजन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम॥
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, 'स्वस्ति' कर्म नशवाये॥

इत्याशीर्वादः।

4. विक्रिया ऋद्धि पूजा

स्थापना
(गीता छन्द)

हे जगत भूषण, विगत दूषण, घोर तप से शुद्ध हो।
ये विक्रिया ऋद्धि सहित, जिन ज्ञान में भी बुद्ध हो।
मन से वचन से काय से, गुरु आज हम पूजा करें।
आव्हानन करते तुम्हारा, भाव भक्ति से भरें॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र अवतर अवतर। संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र मम सिन्नहितौ भव-भव वषट सन्निधिकरणम्।

शेर चाल (तर्ज : हे दीन बन्धु...)

हे विक्रिया धारी गुरु, जल धार मैं करूँ।
हो जन्म जरा नाश मैं, मृत्यु को न वरूँ॥
ये विक्रिया के स्वामी, वात्सल्य धारते।
हर लेते हैं संकट सभी, भक्तों को तारते॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे विक्रिया धारी गुरु, चंदन से हो शीतल।
चंदन से पूजता हूँ, करे आत्मा विमल॥
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे विक्रिया धारी गुरु, अक्षय तुम्हारा ज्ञान।
शुभ अक्षतों से पूजता, अक्षय तुम्हारा ध्यान॥
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे विक्रिया धारी, काम से हुए हो दूर।
तप त्याग में लव लीन हो, सुख पाया है भरपूर॥
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे विक्रिया धारी, तुम्हें भूख न सताए।
नैवेद्य लेके हाथों में, हम पूजने आये॥
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म दीप, आप हृदय में प्रकाशता।
मम ज्ञान दीप ज्योति जले, सिर नवावता॥

ये विक्रिया के स्वामी, वात्सल्य धारते।
हर लेते हैं संकट सभी, भक्तों को तारते।।

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं अष्ट कर्म नाशने को धूप ले आया।
निज कर्म का धुआं उड़े, चरणों में चढ़ाया।।
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं श्रेष्ठ से फल श्रेष्ठ, लाके चरणों में धरूँ।
है मुक्ति फल की भावना, ये आश मैं करूँ।।
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे विक्रिया धारी गुरु तुम्हें, अर्घ्य चढ़ाऊँ।
निज आत्म सौख्य बढ़ चले, तप त्याग बढ़ाऊँ।।
ये विक्रिया के स्वामी......

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

विक्रिया ऋद्धि को धारते, तपधारी निर्ग्रंथ।
उनके चरणों को जजूं, मिले मुक्ति का पंथ।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं।

चाल छंद (तर्ज : ऐ मेरे वतन....)

अणुरूप बराबर होवे, ऋषि छेद में भी घुस जावे।
अणिमा ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

पर्वत सुमेरू सम होवे, तप बल से देह बढ़ावे।
महिमा ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

होवे वायु सा हल्का, उपयोग करे हर पल का।
लघिमा ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

करते हैं भारी तन को, नहि होती ये जन-जन को।
गरिमा ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

भूमि पर ही रहते हैं, औ सूर्य चन्द्र छूते हैं।
प्राप्ति ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

जल में ऐसे चलते हैं, जैसे पग भू धरते हैं।
प्राकाम्य ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

ईश्वर सम है कहलाते, अतिशय कारी बन जाते।
ईशत्व ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

होता वश में जग सारा, बस गुरु ही लगता प्यारा।
वशित्व ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

बिन छेद शैल घुस आवें, मन चाहे जगह में जावें।
अप्रतिघात ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

देखत-देखत छिप जावे, नहि नजर किसी को आवे।
अन्तर्ध्यान ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं अन्तर्ध्यान ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।10।

मनवांछित रूप बनावें, औ वांछित फल को पावें।
कामरूप ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं कामरूपिणी ऋद्धि धारक एकादशभेदसहित सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।11।

॥ चाल छंद ॥

आठों द्रव्यों की थाली, धर्मों की आई लाली।
विक्रिया ऋद्धि के धारी, पूजा है जग हितकारी॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि-प्राप्त-धारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

वश में करके जीव को, राह मुक्ति बतलाएं।
ऐसे श्री ऋषिराज को, शत्-शत् शीश झुकाएं॥

(पद्धरि छंद)

गुरु विक्रिया ऋद्धि के धारी, जग जन इनका है उपकारी।
इनके दर्शन से शक्ति मिले, पूजन से आतम शक्ति बढ़े॥
गुरुदेव कृपा कुछ कर देना, संयम लूँगा शक्ति देना।

तीर्थंकर केवल ज्ञानी हैं, इनकी होती शुभ वाणी है।।
उपदेश करें शुभ समवशरण, भवि जीवों को मिल जाये चरण।
तीनों गतियों के जीव आये, बारह कोठे में जा समाये।।
ओंकार ध्वनि का नाद होय, गणधर निज में उसको संजोय।
निज-निज भाषा में सभी जीव, प्रभु वाणी सुन खुश हो अतीव।।
बैठे गणधर ऋषिवर मुनिवर, निज आत्म सिद्धि पायें यतिवर।
प्रभु दर्शन सम्यग्दर्श देय, भक्तों के संकट सब हरेय।।
अंधा जाकर प्रभु दर्श पाय, कुबड़े की पीठ में सीध आये।
सब अंग भंग अंगों को पाये, रोगी अपनी पीड़ा हराय।।

(चौपाई)

मनवांछित देते हैं दाता, दर्शन करके मन हर्षाता।
स्वर्ण खचित सिंहासन प्यारा, सारी दुनिया से है न्यारा।।
चारांगुल ऊपर में राजे, प्रभु की महिमा सब ही गावें।
देव देवियां नृत्य करे हैं, परमेश्वर के वचन झरे हैं।।
शिरोमणी श्रावक भी आया, आकर उसने प्रश्न सुनाया।
उत्तर सबके मन को भाते, दिव्य देशना सब ही पाते।।
जग से जिनका मन हट जावे, जाकर वो दीक्षा को पावे।
जंगल में मंगल कर देवे, घोर तपस्या में मन देवे।।
बारह तप का पहना बाना, संयम में मन से लग जाना।
वह आत्मानुभूति करते, जो भी प्रभु की शरण में रहते।।
ऋद्धि-सिद्धि सब स्वयं ही आती, धर्म साधना में लग जाती।
सब विकल्प से मुक्त हुये हो, शुभ संकल्प को साथ लिये हो।।
सीधा मन जिनका हो जाता, सीधे मोक्ष पुरी को जाता।
विक्रिया ऋद्धि धारी मुनिवर, तप-तप के बन जाये जिनवर।।
काल करे विकराली छाया, तुमने इससे पिण्ड छुड़ाया।
वंदन बार-बार हम करते, चरणों में चित्त को नित धरते।
''स्वस्ति'' ध्यान करे अविराम, मिले चरण में नित विश्राम।।

दोहा

आगत नागत वर्ग के, हैं जितने ऋषिराज।
उनके चरणों में नमन, करता सकल समाज।।

ॐ ह्रीं विक्रिया-ऋद्धि धारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम।।
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूह नशवाये।।

इत्याशीर्वादः।

5. तपोतिशय ऋद्धि पूजा

स्थापना

त्रिभंगी छन्द

तप ऋद्धि धारी, हो अविकारी, घोर तपस्या आप करें।
शिव पथ अनुनायक, शिवसुखदायक, पथ दिखलाओ कर्म हरें।।
तप से तप ऋद्धि, पाई सिद्धि, कर्म कालिमा आप हरें।
आह्वानन करते, कारज सरते, पूजा तेरी आज करें।।

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र अवतर अवरत। संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तपोतिशयऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि-प्राप्त-सर्वऋषीश्वरेभ्यो समूह! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभू छंद)

निर्मलता और विमलता ही, निज शिव सुख साधन हेतु है।
जब गुरु चरणों अर्पण करता, यह बनता धर्म का सेतु है।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से, तुमने ही नाता तोड़ा है।
तप से तप ऋद्धि जागृत हो, तप से ही नाता जोड़ा है।
ऐसे ऋषि यतिवर मुनिवर की, भावों से पूजा करते हैं।
ऐसी हो शक्ति प्राप्त हमें, तो नमस्कार हम करते हैं।।

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं जीवन जीता पराधीन, स्वाधीन नहीं हो पाया हूँ।
इससे ही मन चिंता करता, संतापित होता आया हूँ।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे पद पराधीन, स्वाधीन सफल तुम गुरुवर हो।
अक्षय पद जिनसे मिलता है, फल छाया देने तरूवर हो।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पांचों इन्द्रिय भिक्षा मांगें, अपने विषयों से कहती हैं।
आतम इच्छा पूरी करता, रोगों के कष्ट को सहती हैं।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इक ढेर लगाओ पर्वत सा, इतना हमने भोजन कीना।
पर इच्छायें बढ़ती जाती, क्षण मात्र स्वाद उसका लीना।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर में छाया अंधकार, इसीलिये ध्यान से डरता हूँ।
बाहर का बल्व जला करके, उसमें ही उलझा रहता हूँ।।

सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंकुश इन्द्रियों पर नहीं लगा, इसीलिये कर्म दौड़े आते।
अपने-अपने फल को देकर, कर्मों को और बुला लाते।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रस दार फलों को ज्यों देखे, खाने को जी ललचाता है।
पर त्याग तपस्या न जाने, जो मुक्ति में पहुँचाता है।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का मिला अर्घ्य, चरणों में तेरे लाया हूँ।
विनती मेरी गुरुवर सुनना, चरणों में शीश झुकाया हूँ।।
सारे जग से इंद्रिय सुख से.....

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

तपसी की आभा लखे, मन प्रसन्न हो जाये।
पूजन के ही मध्य में, पुष्पांजलि कराये।।

मंडलोस्परि: पुष्पांजलिं।

(पद्धरि छंद)

तपसी तप में नित लीन रहे, वह उग्र-उग्र तप रोज करे।
लेकर दीक्षा से मरण काल, वह एक-एक उपवास करे।।
ये दुष्ट कर्म तप से ही जाये, ज्ञानी ही तप में मन लगाए।
चौंसठ ऋद्धि पूजा रचायें, ऋद्धि सिद्धी मम पास आऐं।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।

तप से तप ही बढ़ जाता है, भोजन से मिलती साता है।
आहार करें नीहार न हो, ना मल धातु आश्चर्य अहो॥
मन बल बढ़ता, तन बल बढ़ता, तप करने से तप ही बढ़ता।
है तप्त ताप ऋद्धि सुख दे, मुझको भी तप की शक्ति दे॥

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

ऋद्धि अनेक के हैं स्वामी, तप से हो गये चारों ज्ञानी।
उत्तम से उत्तम त्याग किया, निज आत्म ध्यान को ध्याये जिया॥
वे सिंह निष्क्रीड़ित व्रत धारे, ये कर्म शत्रु तुमसे हारे।
ये महाताप ऋद्धि वर दे, मुझको भी तप की शक्ति दे॥

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

बारह तप करते गुरु विशेष, न कभी रहे कोई भी शेष।
अति जंतु भयंकर रहे जहां, तप करने साधु जायें वहां॥
चहुं ओर घना जंगल छाया, गुरु न डरते रहती माया।
ज्वर आदि कोई आ जावे, आतापन से न घबरावे॥

ॐ ह्रीं घोरतपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

उत्कृष्ट तपस्या में लीन रहें, अतिशय ऋद्धि को प्राप्त करें।
वे तीन लोक को जीत सकें, सागर का पानी सोख सकें॥
यद्यपि यह कार्य नहीं करते, पर शक्ति पूरी हैं धरते।
यह घोर पराक्रम ऋद्धि दें, मुझको भी ऐसी शक्ति दें॥

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

व्रत पंच महाव्रत पाले हैं, समिति गुप्ती रखवाले हैं।
वे ब्रह्म साधना करते हैं, नित आतम में चित धरते हैं॥
दुर्भिक्ष कलह वध रोग भगें, ऋद्धिधर जहां निवास करें।
ऋद्धि अघोर ब्रह्मचारी है, वरदान की मेरी बारी है॥

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

(शंभू छंद)

मुनिघोर तपस्या कर करके, ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करे।
नित आत्म साधना बढ़ा-बढ़ा, गुण-गण का नित भंडार भरे।।
बेला तेला और पक्षमास, उपवास करें सुख पाते हैं।
शक्ति तप की हम भी पावें, चरणों में शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं उग्रतपोतिशयादि अघोर ब्रह्मचर्यान्त सप्त-तपोतिशय ऋद्धि धारक सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

चौपाई

करें तपस्या कर्म खिपाये, कर्मों के ये मेघ हटायें।
तप ही मोक्ष मार्ग दिखलावे, तप ऋद्धि मुक्ति पहुँचावे।।

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धि सहित सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मन में अंकित हो गये, चरण चिन्ह अवशेष।
रूप दिगम्बर धारकर, पाया सौख्य विशेष।।

चौपाई

घोर तपस्या ऋषी ने कीनी, ऋद्धि सिद्धियां आई नवीनी।
मुनिवर जग में दोष रहित हैं, मुनिवर जग में ज्ञान सहित है।।
ऐसे गुरु को शीश झुकाऐं, हम गुण गण समृद्धि पायें।।
निज में निज का ध्यान लगाते, आतम का आनन्द पा जाते।
ऐसे ऋषिवर चरण को बँदू, पूजा करके नित अभिनँदू।।

इन्द्रिय सुख से दूर हैं रहते, आतम सुख में मगन हैं रहते।
जैसी प्रीति वैसी रीति, आतम की कर ली अनुभूति।।
सारी पृथ्वी करे बिछौना, चादर अंबर को कर लीना।
अंदर बाहर हुए दिगम्बर, मन से स्वच्छ सलौना सुंदर।।
जो भी ध्यान तुम्हारा धरते, वचनों से गुणगान जो करते।
पूर्ण उपद्रव टल जाते हैं, सफल मनोरथ हो जाते हैं।।
इष्ट वियोग न होता उनको, अनिष्ट संयोग न होता उनको।
जो भी आपका ध्यान लगाये, मन वच तन से भक्ति गाये।।
नाना विध से तप करते हैं, शक्ति बल आयु बढ़ते हैं।
कर्म सभी निर्जीर्ण किये हैं, सर्व शक्ति को आप लिये हैं।।
ऋद्धि सिद्धियां पास हैं आती, मुक्ति सुंदरी तुम्हें बुलाती।
आत्म ध्यान अवगाहन करते, आनन्दित हो अमृत चखते।।
अध्यात्मिक सुख शांति पायी, इसी से दृष्टि न भरमायी।
चित्चैतन्य का चमत्कार है, उनको मेरा नमस्कार है।।
शत्रु मोह मेरा भग जावे, जीवन में सुख शांति आवे।
उग्र दीप्त तप महातपो हैं, घोर अघोर में ध्यान रमो है।।
घोर ब्रह्म चर्या को पालें, निश्चित ब्रह्मा पास बुला लें।
मैं भी शरणागत बन आया, काटो पाप कर्म की छाया।।
करिये कृपा मुक्ति में जाये, आकर 'स्वस्ति' शीश झुकाये।।

दोहा

समवशरण में बैठकर, पाया तुमने ज्ञान।
तप ऋद्धि धारी गुरु, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं तपोतिशय ऋद्धिप्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम।।

चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूह नशवाये।।

इत्याशीर्वादः।

6. बल ऋद्धि पूजा

स्थापना

अडिल्ल छंद

त्याग परीषह वन जा हुए दिगम्बरा।
मन वच तन से तप करते योगीश्वरा।।
पावन हो गई उनकी भी यह आत्मा।
बल ऋद्धि पा हो गये अंतरात्मा।।
मन बल वच बल काया ऋद्धि पाई है।
आव्हानन हम करें भक्ति हुलसाई है।।

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र अवतर अवरत। संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छंद)

मैं जन्म श्रृंखला तोड़ूँ, मृत्यु से मुख को मोड़ूँ।
इसीलिये मैं जल ले आया, पूजन करके हर्षाया।।
तीनों बल ऋद्धि स्वामी, दुख मेटो अन्तर्यामी।
मन वच तन से तुम्हें ध्याऊँ, इनकी निरोगता पाऊँ।।

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को लाया, चंदन सा तुमको पाया।
शीतलता निज में पाऊँ, पूजा करके हर्षाऊँ।।

तीनों बल ऋद्धि स्वामी, दुख मेटो अन्तर्यामी।
मन वच तन से तुम्हें ध्याऊँ, इनकी निरोगता पाऊँ॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो है अखंड अविनाशी, वो हैं शिवपुर का वासी।
पूजन को अक्षत लाया, अक्षय पद हेतु चढ़ाया॥
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

है पुष्प का रूप सलौना, पर है न कोई खिलौना।
पूजन को पुष्प मैं लाऊँ, मम काम भाव नशवाऊँ।
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हर गती में भोजन पाया, पर क्षुधा नहीं नशवाया।
नैवेद्य मैं लेकर आया, चरणों में शीश झुकाया॥
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्यारी दीपक की ज्योति, मिले ज्ञान का मुझको मोती।
पूजन को दीपक लाये, निज ज्ञान दीप प्रजलाये॥
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह शत्रु मोह न भागे, कर्मों में सबसे आगे।
अग्नी में धूप चढ़ायें, कर्मों का धुआं उड़ायें॥
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से मुक्ति फल चाहूँ, पाकर के मैं हषाऊँ।
इसलिये मैं फल ले आया, चरणों में इन्हें चढ़ाया॥
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन चरणों में आऊँ, मैं आठों द्रव्य चढ़ाऊँ।
करो अष्ट कर्म का नाशा, हो मुक्तिपुरी में वासा।।
तीनों बल ऋद्धि स्वामी.....

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

गीता छन्द

मन वचन काय विशुद्ध करके, तीनों ऋद्धि पाई हैं।
त्रियोग से शत बार वंदन, शांति सब दिश छाई है।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं।

चौपाई

मन बल ऋद्धि है सुखकारी, मन ही सुखी दुखी करतारी।
श्रुत चिंतन करें दोय घड़ी में, पूजा करते सभी झड़ी में।।
मन को पूरी शक्ति देना, केवल मन ही शुद्ध कर देना।
होवे ऐसी कृपा तुम्हारी, हम हैं तेरे सदा आभारी।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

त्रिभंगी छंद

वचनों की शक्ति, प्रभु की भक्ति, श्रुत उच्चारण करते हैं।
हैं वचन विशेषा, शक्ति अशेषा, सरस्वती को वरते हैं।।
है मधुरस वाणी, जन कल्याणी, कर्ण को तृप्ति देती है।
ऋद्धि मैं पाऊँ, सिद्धि ध्याऊँ, सारा दुख हर लेती है।।

ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

चाल छंद

कायोत्सर्गासन ठाड़े, गर्मी वर्षा या जाड़े।
वे कष्ट न कोई पावे, अतिशय ऋद्धि बतलावे।।

तप करने शक्ति आई, तप ने तप शक्ति बढ़ाई।
हम शक्ति काय बल पाये, जग में न फिर भरमायें॥

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 3।

गीता छंद (*तर्ज : प्रभु पतित पावन...*)

मोक्ष पथ पर चलें मुनिवर, सजग रहते कर्म से।
वे रत्नत्रय निधि रक्षा करते, न डिगें वो धर्म से॥
मन में श्रद्धा, वच से ज्ञानी, काय में चारित्र है।
धनवान हैं जग में गुरुवर, धर्म इनका मित्र है॥
मन वचन काय विशुद्ध होवे, शक्ति ऐसी दीजिये।
है अर्घ्य भक्ति से भरा ये, श्रद्धा मेरी लीजिये॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

मन कंचन सा शुद्ध है, शुद्ध है जिनका ज्ञान।
काया की शुद्धि करें, ये यतिवर भगवान॥

शेर चाल (*हे दी बन्धु....*)

जय वीर जिनका धर्म, नित आगे को बढ़ रहा।
गणधर ऋषि मुनि के मन को, साथ गढ़ रहा॥
जिनदेव की जो वंदना करते हैं, नित प्रति।
वे छूटते हैं दुर्गति से, पाये सद्गति॥
ये मन ही सर्व पाप मोह, कर्म खान है।
दिन रात घूमता है मन, पापों का ध्यान है॥
इस मन को आपने गुरु, विशुद्ध कर लिया।
वश में किया है इसको, निज ध्यान भी किया॥

वचनों की शक्ति आदमी ये, जानता नहीं।
वचनों का करे दुरूपयोग, मानता नहीं।।
इन वचनों को भगवान के, गुणगान में लगा।
ये आत्मा जो सो गया, इसको तू ही जगा।।
मुनि मौन रखके आत्मा, का ध्यान हैं करें।
वचनों से करें स्वाध्याय, गुणगान भी करें।।
वचनों की शक्ति आपकी, इससे ही बढ़ गई।
करते हैं नमस्कार मेरी, आत्मा जगी।।
हर जन्म में जहां गया, काया वहां मिली।
पर ज्ञान की संयम की वहां, कलियां न खिलीं।।
ये इन्द्रियां अभी भी यहां, वश में ना होतीं।
संयम के पालने में ये, खुश नहीं होतीं।।
इस काया को गुरु जी आप, वश में हैं रखते।
ये कितनी करे मांग किन्तु, स्वाद न चखते।।
गुरु आपने तप अग्नि में, काया को तपाया।
ये कर्म दुष्ट जितने हैं, उनको भी भगाया।।
बाहुबलि जी ध्यान में, इक वर्ष थे खड़े।
वे कर्म उनके आगे हाथ, जोड़ के पड़े।।
काया तपे तो आत्मा भी, तपती है वहां।
गुरु ऐसी ऋद्धियां दो, सद् धर्म हो जहां।।
तिर्यंच देव देवियां, सब वंदना करें।
सौ इन्द्र आके आपकी, नित अर्चना करें।।
हे ऋद्धियों के नाथ कृपा, दृष्टि कीजिये।
झोली है मेरी खाली ज्ञान, से भरीजिये।।
अध्यात्म योगी, वीतरागी, संत हो तुम्हीं।
मन के बली, वच के बली, महंत हो तुम्हीं।।
हे दीनबंधु ऋषिवर हम, शरण आये हैं।
गुरु श्रद्धा भक्ति का ये, अर्घ्य साथ लाये हैं।।

दोहा

कृपा सिन्धु तुम संत हो, सागर सम है ज्ञान।
ऋद्धि सिद्धि वरदान दो, बारंबार प्रणाम॥
ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम॥
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूह नशवाये॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि

7. औषधि ऋद्धि पूजा

स्थापना

गीता छंद

आत्मा से आत्मा का, ध्यान नित मुनि जन करें।
अठ बीस गुण पालन करें, औ परीषह को नित सहें॥
स्वयंमेव सेवा होती है, ऋषिजन जहां भी जावते।
सब रोग शोक भगें वहां से, पूजा को हम आवते॥

ॐ ह्रीं सर्व-विघ्न-विनाशक औषध-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम् ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट सन्निधिकरणम्

(शंभू छंद)

तन धोते हैं मल-मल कर भी, नवद्वार बहायें घिनकारी।
निज आत्मा को धोने ऋषिवर, यह लाया जल मैं हितकारी॥

औषध ऋद्धि के स्वामी हो, बिन औषध-औषध करते हैं।
सब रोग व्याधि को दूर करो, चरणों में माथा धरते हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

ईंधाग्नि सी उदराग्नि ये, तन मन का ताप बढ़ाते हैं।
प्रभु गुण चंदन ही होते हैं, जो मन का ताप नशाते हैं॥
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पद पाया क्षय होता है, अक्षय पद को ही पाना है।
उज्ज्वल अक्षत लेकर आये, मुक्ति पद आश लगाना है॥
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नित काम भोग ही भ्रमित करे, क्या सत्य है जान नहीं पाया।
पुष्पों सम सुंदर लगते हैं, इसीलिये पुष्प मैं ले आया॥
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो निराहार आहार नहीं, फिर भी कांति बढ़ती जाये।
हम हर पल खा चिन्ता करते, फिर भी शक्ति घटती जाये॥
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक उजियाले की माला, चहुं दिशा प्रकाशित करती है।
अंतर में गम का तम छाया, संतुलित न जीवन करती है॥
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध

ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पैसा पैसे को ज्यों खींचे, ये कर्म-कर्म बुलवाते हैं।
कर्मों की लीला न्यारी है, जग को ये नाच नचाते हैं।।
औषध ऋद्धि के स्वामी हो, बिन औषध-औषध करते हैं।
सब रोग व्याधि को दूर करो, चरणों में माथा धरते हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे फल मैं खाता, कर्मों का फल भी खाता हूँ।
पर तृप्ति नही है इस फल में, मुक्ति फल पाने आता हूँ।।
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का वैभव तो नश्वर है, नश्वर जग की यह माया है।
अविनश्वर पद की चाह करूँ, जहां सिद्ध प्रभु की छाया है।।
औषध ऋद्धि के स्वामी.....

ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

तप की अग्नि जब जले, सारे रोग नशाय।
औषधि ऋद्धि धर गुरु, शत्-शत् शीश नवायें।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं।

चाल छंद (सम्मेद शिखर)

तप अग्नी ऐसी जलावें, सब कर्म रोग नश जावें।
आमौंषधि ऋद्धि को पाया, रोगों का किया सफाया।।

मैं पूजा करने आया, चरणों में शीश झुकाया।
सब रोग शोक मिट जाये, आशीष आपका पाये।

ॐ ह्रीं आमर्शौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

कफ लार थूक आ जाये, वह रोगों को नशवाये।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धि को पाया, रोगों का किया सफाया।।
मैं पूजा करने आया.....

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

तनु स्वेद जल्ल मल आये, तप से औषध बन जाये।
जल्लौषधि ऋद्धि को पाया, रोगों का किया सफाया।।
मैं पूजा करने आया.....

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

जिव्हा कर्णादिक मैल, औषध का बनता तेल।
मल्लौषधि ऋद्धि को पाया, रोगों का किया सफाया।।
मैं पूजा करने आया.....

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

मल भी औषध बन जाये, तप से यह ऋद्धि पाये।
विप्रौषधि ऋद्धि को पाया, रोगों का किया सफाया।।
मैं पूजा करने आया.....

ॐ ह्रीं विप्रौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

मुनि तन जो वायु छुऐ हैं, वह वायु रोग हरे हैं।
सर्वोषधि ऋद्धि को पाया, रोगों का किया सफाया।।
मैं पूजा करने आया.....

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

अन्नादि में यदि विष हो, मुनि कहते ही निर्विष हो।
नर व्याधि मुक्त हो जाये, मुख निर्विष ऋद्धि आये।।
मैं पूजा करने आया.....

ॐ ह्रीं मुखनिर्विषौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

दृष्टि में औषध आया, देखत निर्विष करवाया।
दृष्टि में अमृत आये, अमृत सब पर बरसाये॥
मैं पूजा करने आया, चरणों में शीश झुकाया।
सब रोग शोक मिट जाये, आशीष आपका पाये।
ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विषौषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

त्रिभंगी छंद

तन औषध होता, रोग को खोता, जीवों को गुरु स्वस्थ करें।
यह मैल जो तन का, औषध बनता, जीवों पर उपकार करें॥
विष निर्विष होता, अमृत देता, अवलोकन से व्याधि हरे।
हम रोग नशायें, अर्घ्य चढ़ायें, जीवन में सुख शांति भरें॥
ॐ ह्रीं आमर्शौषधि ऋद्धिधारक दृष्टि निर्विषौषधि ऋद्धिधारक पर्यन्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

रोगों का हो जाये अंता, जहां भी जायें ये भगवन्ता।
औषध ऋद्धि के ये स्वामी, शीश झुका कर करूँ नमामि॥
ॐ ह्रीं सर्वक्षुद्रोपद्रव-विघ्न-विनाशक सर्वरोगहराय सर्वशांतिकराय औषध ऋद्धिधारक मुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आत्म ध्यान से स्वस्थ हैं, ऋषिगण सभी महंत।
तपाराधना के धनी, हम सब करें नमंत॥

छंद : त्रोटक छंद

जय-जय ऋषिगण के पाद नमूँ, गुण गण वर्धक निष्पाप नमूँ।

जय-जय यतियों के नाथ नमूँ, कथनी करनी कर एक नमूँ।।
चौबीसों जिन नित प्रातः नमूँ, हर पल हर क्षण जिन नाथ नमूँ।
निज आत्म शक्ति के दायक हो, भक्तों के ध्याने लायक हो।।
तुम दुष्ट कर्म के छायक हो, तीनों लोकों के नायक हो।
चरणों को जो छू लेता है, कर्मों को वो हर लेता है।।
तेरा दर्शन इक बार करे, संसार सिन्धु को पार करे।
तप से आतम शक्ति मिलती, तप से आतम कलियां खिलतीं।।
तप ने कर्मों को है मारा, तप ने आराधक को तारा।
तप से गुरुवर ऋद्धि पाये, तप से वपु औषधि बन जाये।।
तप ही करता सब चमत्कार, तपसी को मेरा नमस्कार।
तपसी ने पाई सब ऋद्धि, तपसी ने पाई सब सिद्धि।।
अमृत मय जीवन होता है, अमृत सब पर बरसाता है।
रोगों ने मुझको लिया घेर, रोगों ने मुझको किया ढेर।।
रोगी तन न कोई काम करे, रोगी के रग-रग रोग भरे।
प्रतिदिन मैं औषध खाता हूँ, वैद्यों को भी दिखलाता हूँ।।
व्याधि पर व्याधि बढ़ जाये, रोगों पर रोग भी चढ़ जाये।
रोगी तन धर्म न करता है, पर धर्म ही रोग को हरता है।।
इस सत्य से मैं अंजाना था, अपने तन का दीवाना था।
आतम की याद न आती है, कर्मों की बात न भाती है।।
जिस दिन मन कर्म को समझेगा, उस दिन मन धर्म को समझेगा।
जब धर्म की छाया पायेगा, सुख शांति अनुभव आयेगा।।
मुनि गण ऋषिगण तप करते हैं, ऋद्धि सिद्धि को वरते हैं।
यह जैन धर्म की शक्ति है, यह परमेश्वर की भक्ति है।।
प्रभू पूजा को निशदिन करना, पापों की गठरी को हरना।
ऋद्धि सिद्धि भी आयेगी, कर्मों को शीघ्र नशायेगी।।
वे लोकालोक प्रकाशी हैं, वे सिद्धालय के वासी हैं।
''स्वस्ति'' गुरु का गुणगान करे, मन से उनका सम्मान करे।।

दोहा

औषध ऋद्धि मुनीवरा, सबको करो निरोग।
आज हमारी बारी है, हरो सभी का शोक॥

ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरें, बारंबार प्रणाम॥
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूह नशवाये॥

8. रस ऋद्धि पूजा

स्थापना

गीता छंद ***(तर्ज: प्रभु पत्तित पावन...)***

है विविध रूपों में तपस्या, साधु जन धारण करें।
ये वीतरागी हैं विरागी, गगन में चारण करें॥
रस त्याग कर भोजन करें, आहार भी अमृत बने।
आव्हानन करते हम गुरुवर, काज सब बिगड़े बनें॥

ॐ ह्रीं रसऋद्धि प्राप्त सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र अवतर अवतर। संवौषट आह्वाननं

ॐ ह्रीं रसऋद्धि प्राप्त सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं रसऋद्धि प्राप्त सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्

शंभु छंद (*तर्ज: भला किसी का...*)

पांचों पापों में रमा रहा, बहु मैल है संचित कर लीना।
जल लेकर चरणों में आया, कुछ और उपाय नहीं कीना।।
निर्मल गंगा जल ले करके, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज इसे, चरणों में शीश झुकाया हूँ।।
नीरस भोजन रस स्वाद आये, रस ऋद्धि अतिशय करती है।
मैं साम्य भाव का रस पाऊँ, जो क्रोध कषायें हरती है।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गृहस्थी में अस्थी निकल गई, चिंता ने पीछा न छोड़ा।
संतापित यह मन रहता है, पर धर्म से नाता न जोड़ा।।
मलयागिर चंदन ले करके, चरणों में प्रभुवर आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हर पल पद के पीछे भागा, पर पद ने निष्पद कर दीना।
अक्षय पद अविनाशी होता, पुरूषार्थ नहीं हमने कीना।।
मोती से अक्षत ले करके, चरणों में तेरे आया हूं।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह काम प्रलोभन देता है, इसकी माया भटकाती है।
आतम गतियों में घूम रहा, नरकों में ये पिटवाती है।।
पुष्पों की माला ले करके, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस ने निज रस से दूर रखा, रस में उलझाये रहता है।
नित-नये व्यंजन खा-खाकर भी, मन को बहलाये रहता है।।
नैवेद्य की थाली ले करके, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज चंदा का उजियाला, आ करके जाने वाला है।
अंतर में ज्ञान की ज्योति जले, जिसने अंधियारा टाला है।।
दीपक का थाल सजा करके, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज इसे, चरणों में शीश झुकाया हूँ।।
नीरस भोजन रस स्वाद आये, रस ऋद्धि अतिशय करती है।
मैं साम्य भाव का रस पाऊँ, जो क्रोध कषायें हरती है।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से गंध-सुगंध मिले, आतम भी सुरभित है मेरा।
कर्मों का धुआं उड़ेगा जब, तब दर्शन पाऊँगा तेरा।।
आठों कर्मों के नाश हेतु, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अपनी-अपनी ऋतुओं में फल, हर वृक्षों पर लग जाते हैं।
अक्षय अखंड अविनाशी फल, मुक्ती जाकर ही पाते हैं।।
मुक्ता फल लेकर हाथों में, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भर आतम का ध्यान होय, अध्यात्मिक सुख मिल जाता है।
जिसने भी आतम को ध्याया, जियरा उसका हर्षाता है।।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य लिये, चरणों में तेरे आया हूँ।
स्वीकार करो गुरु आज.....

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

तीन लोक तिहुं काल मे, गुरु ही मार्ग दिखाये।
संकट हर सुख कारणे, पुष्पांजलि कराये।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं।

शेर चाल *(हे दीन बुंधु....)*

तप धारने से ऋद्धियां, आती हैं वे स्वयं,
सम्यक्त्व ज्ञान पा लिया गल, जाता है अहम।।
मर जा कहे तो शीघ्र ही मर जायेगा वहीं।,
पर वे प्रयोग ना करे, आशीर्विष कहीं।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष रसऋद्धि प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

यदि कभी गलती करे तो, क्रोध आयेगा,
औ देख ले जो क्रोध से, मृत्यु को पायेगा।
करूणा के हैं निधान वे, ऐसा नहीं करते,
दृष्टि में रखके विष को, वरदान ही देते।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष रसऋद्धि प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

हाथों में यदि रूक्ष, आहार आयेगा,
हो जायेगा स्वादिष्ट क्षीर, स्वाद पायेगा।
ये त्याग-त्याग करके, आहार करे हैं,
ये ऋद्धि क्षीर स्त्रावी फिर, निज में धरे हैं।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्त्रावी रसऋद्धि प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

हाथों में यदी रूक्ष, आहार आयेगा,
हो जायेगा स्वादिष्ट मधुर, स्वाद पायेगा।
ये त्याग-त्याग करके, आहार करे हैं,
ये ऋद्धि मधु स्त्रावी, फिर निज में धरे हैं।।

ॐ ह्रीं मधुस्त्रावि रसऋद्धि प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

हो विष मिला भोजन यदि, अमृत उसे करे,
वाणी में भरा ज्ञान जो, अमृत सा नित झरे।
ये ऋद्धियां जन-जन की सभी, आपदा हरें,
है ऋद्धि अमृतस्त्रावी, पापी सभी तरे।।

ॐ ह्रीं अमृतस्त्रावि रसऋद्धि प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

हाथों में यदि रूक्ष, आहार आयेगा,
होगा नहीं नीरस वो घी का, स्वाद पायेगा।
अतिशय है उनके तन में जो, स्वस्थ रहे हैं,
ऋद्धि है सर्पिस्त्रावी, जो कष्ट हरे हैं।।

ॐ ह्रीं सर्पिस्त्राव रसऋद्धि प्राप्त सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

चौपाई

संयम मन वच काया लेकर, सुखकारी निज ज्ञान को देकर।
जिव्हा को वश में रखते हैं, स्वाद रसों का नहि चखते हैं।।
संयम मैं भी ऐसा पाऊँ, समता को अंदर में लाऊँ।
ऐसे मुनि की पूजा करता, जीवन में सुख शांति भरता।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

दोहा

ऋद्धिधारी मुनीवरा, जपूं तुम्हारा नाम।
जिव्हा इन्द्रिय वश किया, शत्-शत् बार प्रणाम।।

(शंभु छंद)

हे अतिशयकारी तीर्थंकर, इस जग में तुम रत्नाकर हो।
भक्तों पर अतिशय बरसाते, त्रिलोक में ज्ञान दिवाकर हो।।
चौसठ ऋद्धि के नाथ आप, इन्द्रिय सुख की कुछ चाह नहीं।

निज आतम में ही लीन रहो, है मुक्तिपुरी की राह यही।।
शिष्यों को दीक्षा दे करके, शिक्षा से ज्ञानी करते हो।
नित त्याग तपस्या पथ दिखला, पुण्यों से झोली भरते हो।।
पांचों इन्द्रिय का दमन किया, तुम इन्द्रिय विजय कहाये हो।
तप से ही निज पर जय पाई, तप से ही कर्म भगाये हो।।
ये कर्म बड़े बलवान प्रभो, हमकों भी नित्य सताते हैं।
चारों गतियों में भ्रमण करा, नरकों की राह दिखाते हैं।।
है पुण्य उदय अब आया तो, तेरी शरणा में आये हैं।
तेरा दर्शन प्रभु पा करके, हम फूले नहीं समाये हैं।।
नरकों की कहूँ कहानी क्या, खाने को भोजन मिला नहीं।
और भूख लगी इतनी ज्यादा, सारे भू का अन्न मिले नहीं।।
प्यासा तड़फा पानी मांगा, पर एक बूंद न पायी है।
नित हाय-हाय करता रहता, यह घोर वेदना पायी है।।
वृक्षों के नीचे बैठा तो, पत्तों ने आकर तन काटा।
फिर बड़े-बड़े हथियारों से, दुष्टों ने मेरा तन काटा।।
चाहा पर मृत्यु नहीं हुई, जीवन तो भारी बोझ बना।
नरकों के सारे कष्ट सहे, बस पाप किये न कर्म हना।।
तिर्यंच गति बहु दुखमय है, प्रभु भूख प्यास बहु मार सही।
क्या कहूँ वेदना अपनी मैं, वाणी न मिली न बात कही।।
मन ही मन में रो लेता था, इक पल न सुख की सांस मिली।
बोझा ढोया डंडे खाये, बातों की मार भी खूब मिली।।
यदि बना देव-ईर्ष्या कीनी, स्वर्गों का सुख न भोगा था।
अरू बैल बना हाथी घोड़ा, इन्द्रों का आसन चाहा था।।
मुरझाई माला मैं बिलखा, दुर्गतियों में फिर चला गया।
कर्मों का फल पाने को मैं, चौरासी का चक्कर लगा लिया।।
नौ माह मात के उदर रहा, मैं हलन-चलन नहि कर पाया।
औ जन्म समय की पीड़ा को, अपने मुख से न कह पाया।।
मानुष गति में भी सुःख नहीं, कभी धन कभी मन का दुख पाया।
अपनों ने भारी कष्ट दिये, अपमान वचन सुन न पाया।।

अब सहा नहीं जाता प्रभु, गतियों के बंधन मुक्त करो।
आया हूँ शरणा मैं तेरी, अध्यात्म ज्ञान से झोली भरो।।
शक्ति मुझको ऐसी देना, आतम परमातम को पहचानूँ।
जग की बातें न भाये मुझे, बस आगम आज्ञा मैं मानूँ।।
रस ऋद्धि धारी हे मुनिवर, चरणों में करते नमस्कार।
'स्वस्ति' जीवन में ज्ञान करे, चाहूँ मैं एक ही पुरस्कार।।

दोहा

विष को निर्विष तुम करो, मेटो करम कलेश।
परिभ्रमण के फेरे से, काढ़ो हे अवधेश।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धि धारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम।।
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूहनशवाये।।

इत्याशीर्वादः।

9. अक्षीण महानस ऋद्धि पूजा

स्थापना

त्रिभंगी छंद

जन-जन के बंधू, धर्म के सिन्धु, ऋद्धिधारी हो मुनिवर।
हो करूणा सागर, ज्ञान की गागर, सिद्धि धारी हो गुरुवर।।
चरणों की पूजा, काम न दूजा, वांछित फल को देती है।
अक्षीण है ऋद्धि, पाऊँ सिद्धि, मन को शुद्ध कर देती है।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र अवतर अवतर। संवौषट आह्वाननं

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वर समूह! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट सन्निधिकरणम्

गीता छंद

लोभी की तृष्णा बढ़े, आतम कलंकित होता है।
निज आत्म धन की रक्षा हेतु, धर्म अंकित होता है।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध चंदन से मिले, मम ज्ञान जीवन शुद्ध हो।
दुर्गंध दुर्गुण की हरे, ये चरण चंदन पूज हो।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंडित, शालि लेकर, आपकी पूजा करूँ।
अविनाशी अक्षय पाय पद को, कर्म सारे परिहरूँ।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प कोमल है सुगन्धित, चरणों में मैं लाऊँगा।
शील शुद्धि, मनः शुद्धि, आत्म बल को पाऊँगा।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना व्यंजन खा लिये, पर भूख ये मिटती नहीं।
अब दिव्य अमृत दो प्रभु जी, शांत होवे भूख भी।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप माला जगमगे सब, दूर हो तम जगत का।
मैं लाया चरणों दीप प्रभु, उद्धार हो इस भगत का।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चार गतियों में लगाये, फेरे जन्म मृत्यु के।
अब कर्म सारे नष्ट कर दो, पाऊँ भव से मुक्ति मैं।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से फल की चाह रक्खूँ, जगत निधि न चाहिये।
मुक्ति में जाके बसूँ, बस एक युक्ति चाहिये।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चढ़ाया चंदनादि, अर्घ्य से पूजा करूँ।
औ कर्म आठों नष्ट कर दो, मोक्ष लक्ष्मी को वरूँ।।
ज्ञान केवल दर्श केवल, आप गुरुवर पायेंगे।
आराधना मन से करे, मम कर्म मल हर जायेंगे।।

ॐ ह्रीं अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अष्टम भूमि पावने, तप करते दिन रैन।
ऋषि चरण को पूजते, जग में है न चैन।।

मंडलोस्परि: पुष्पांजलिं।

(भुजंग प्रयात छंद) नरेन्द्र फणीन्द्रं.....

करे वे तपस्या तो ऋद्धि है आती, आके मुनीवर को शीश झुकाती।
ऐसे मुनि जहां आहार लेते, न होवे खतम औ सभी जीम लेते।।
अक्षीण ऋद्धि के धारी मुनिवर, करते नमस्कार हो शांति गुरूवर।
पूजा तेरी चित्त को शांति देती, हरती करम को सभी सु:ख देती।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

भूमि हो थोड़ी बहुत जीव बैठे, जरा न हो कष्ट सभी दर्श लेवे।
कब मैं करूं दर्श ऐसे मुनी का, छू लूँ चरण वर मैं पालूँ उन्हीं का।।
ऋद्धि महालय के धारी मुनिवर, करते नमस्कार हो शांति गुरूवर।
पूजा तेरी चित्त को शांति देती, हरती करम को सभी सु:ख देती।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

चारों अनुयोग में इनका वर्णन, ध्याऊँ उन्हें मैं औ बैठूँगा चरणन।
क्षीण न हो अन्न अक्षीण होवे, महालय में आलय कभी कम न होवे।।
भावों से मुनिवर की भक्ति है करते, पाऊँगा ऋद्धि नमस्कार करते।
पूजा तेरी चित्त को शांति देती, हरती करम को सभी सु:ख देती।

ॐ ह्रीं द्विविध ऋद्धिधारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

करूणा वान हैं वे मुनि, रत्नत्रय में लीन।
जग पर करूणा कीजिये, पाऊँ ऋद्धि प्रवीण।।

चौपाई

हे परमेश्वर हे विमलेश्वर, तीनों जग के तुम्हीं हो ईश्वर।
चरण कमल का मैं अभिलाषी, तुम हो सिद्धालय के वासी।
है पावन तेरे चरणाम्बुज, तेरे चरण का बनूँ मैं अंबुज।
पूजा की शुभ घड़ी ये आई, हमने अपनी व्यथा सुनाई।1।
चारों गतियों में घूमा हूँ, दर-दर ठोकर खा आया हूँ।
कर्मों ने मुझको भरमाया, इसीलिये मैं शरण में आया।
कर्म आठ हैं मैं हूँ अकेला, जग में इनका लगा है मेला।
ज्ञानावरणी ज्ञान न देवे, अज्ञानी पापों को लेवे।2।
महिमा तेरी जान न पाया, जग के रिश्तों में भरमाया।
अज्ञानी हूँ ज्ञानी कर दो, ज्ञान से मेरी झोली भर दो।
दर्शन पर आवरण जो डाले, दर्शनावरणी है वे जाले।
आतम का दर्शन न पाऊँ, इसी से तेरी शरण में आऊँ।3।
निश दिन नींद के घेरे रहता, कर्मों के दुःखों को सहता।
दर्शनावरणी दूर किया है, आतम दर्शन पूर्ण लिया है।
वेदनीय का किया है चूरा, आतम आनंद लिया है पूरा।
वेदनीय सुख-दुख को देवे, पुण्य पाप का फल है लेवे।4।
सुख में कुछ भी याद न रहता, दुख को रो-रो करके कहता।
मोह मोक्ष में बाधा डाले, मोह बने घर के रखवाले।
मोही मन पूजा न करता, पापों से झोली को भरता।
मोही मन घर में भटकावे, मोही मन मंदिर न जावे।5।
मोही मन उपदेश न सुनता, मोही मन पापों को बुनता।
कठिन मोह को तुमने छोड़ा, फिर सम्यक्त्व से नाता जोड़ा।
हम है बड़े जीव अज्ञानी, कर दो मुझको प्रभु जी ज्ञानी।
चारों आयु में बंधन है, चारों गतियों में क्रंदन है।6।
देव पशु नर नारक होवे, अपने कर्मों के फल भोगें।
कर्म आयु भी तुमसे हारा, तुमने भवसागर को पारा।
नाम से तन की रचना होवे, तीर्थंकर प्रकृति सुख देवे।
ऊँच-नीच भी कर्म बनाता, गोत्र कर्म ही वह कहलाता।7।

भोगोपभोग में बाधा डाले, अंतराय के हैं वे जाले।
देने के वह भाव बनावे, अंतराय मध्य में पड़ जावे।
आपने सारे कर्म निवारे, हम बैठे कर्मों के मारे।
दया का किस्सा है मशहूरा, जाना न प्रभु हृदय से दूरा।8।
सम्यक् दर्शन निधि को पाऊँ, चरणों में आ शीश झुकाऊँ।
दया की दृष्टि हम पर कीजे, 'स्वस्ति' को निज शरणा लीजे।17।

दोहा

ऋद्धि धारी मुनीवरा, पावेंगे निर्वाण।
शिव पथ का राही बनूँ, बारंबार प्रणाम।9।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक सर्वमुनीश्वरेभ्यो जयमालाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्त जन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम।।
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूह नशवाये।।

इत्याशीर्वादः।

समुच्चय जयमाला

दोहा

जिनवर गणधर को नमूँ, नमूँ ऋद्धि के नाथ।
संकट हर सुख कर तुम्हीं, धरूँ चरण में माथ।।

(त्रोटक छंद)

जिन जीता है सब कर्मों को, जिन पाया है सब धर्मों को।
जिनकी छवि वीर जिनेश्वर है, जो सब जग के ही ईश्वर हैं।।

तीर्थंकर वे ही कहलाते, चरणों की पूजा सुख पाते।
गणधर ने वाणी झेली है, किरणें ये ज्ञान की फैली हैं।।1।।
अर्चा पूजा स्तुति करते, दर्शन कर सुख शांति धरते।
दुर्द्धर कर्मों को नष्ट किया, फिर सम्यक दीप प्रकाश लिया।।
चौंसठ सिद्धि धारें जिनवर, औ ऋद्धि धारी हैं गणधर।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, हम भी पायें, वर दे गणधर।।2।।
अठदश बुद्धि के भेद कहे, बुद्धि ऋद्धि सब ज्ञान लहे।
मतिश्रुत अवधि धारी मुनिवर, मनपर्यय पावे वे गणधर।।
केवल केवलज्ञानी होते, वे घात घातिया सुख पाते।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, हम भी पायें, वर दे गणधर।।3।।
है बीज ऋद्धि शुभफल देती, है कोष्ठ ऋद्धि ज्ञानी करती।
पदानुसारिणी पद जाने, संभिन्न श्रोतृ सुन कर माने।।
दूरास्वादन सब स्वाद लहे, स्पर्श घ्राण सब तेज भये।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, हम भी पायें, वर दे गणधर।।4।।
वे दूर श्रवण कर लेते हैं, वे दूर-दूर का देखे हैं।
है दश पूर्वी चौदह पूर्वी, अष्टांग निमित्त के हैं गर्वी।।
प्रज्ञाविशेष धारण करते, प्रत्येक वाद बुद्धि धरते।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, ऋद्धि पायें, वर दे गणधर।।5।।
तन को चाहे जैसा करते, वे विक्रिया ऋद्धि को धरते।
तन छोटा और बड़ा कीना, अणिमा महिमा ऋद्धि लीना।।
मुनि हल्का भारी वपू करें, लघिमा गरिमा ऋद्धि को लहे।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, ऋद्धि पायें, वर दे गणधर।।6।।
भू पर रह रवि शशि को छूते, जल पर पृथ्वी सम हैं चलते।
प्राकाम्य ईश वशित्व ऋद्धि, वश में करते सबको मुनि जी।।
अप्रतिघात घात नहि करते, हो अन्तर्ध्यान ऋद्धि को वरते।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, ऋद्धि पाये, वर दे गणधर।।7।।
वे रहित सहारे चलते हैं, आकाश में चारण करते हैं।
नभ में जल में अग्नि में चले, तन्तु मेघों की धारा चले।।

वायु जंघा ज्योतिष चारण, वे अतिशय में होते कारण।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, ऋद्धि पायें, वर दे गणधर॥8॥
वे उग्रदीप्त तप घोर तपे, वे आत्म ध्यान की जाप जपे।
वे घोर ब्रह्म की अर्चा करें, वे नहीं कोई भी चर्चा करें॥
मन बल वच बल काया के बली, मुस्काय गई अंतर की कली।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, ऋद्धि पायें, वर दे गणधर॥9॥
तन कफ मल में औषधि रहती, वाणी सबको निर्विष करती।
नीरस को रस कर देते हैं, अमृत-सा स्वाद भी लेते हैं॥
अन्न क्षीण नहि होता है, स्थान भी कम न पड़ता है।
ऋद्धि सिद्धि धारी ऋषिवर, ऋद्धि पायें, वर दे गणधर॥10॥

ॐ ह्रीं आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु त्रयपद धारक अतीत अनागत वर्तमान काल संबंधि सर्वमुनीश्वरेभ्य: पुष्टि तुष्टि शांति करेभ्यो अनेक रोग-शोक-आधि-व्याधि -डाकिनी शाकिनी-भूत प्रेत-व्यंतरादि-दुष्ट ग्रह-दुर्भिक्षादि सर्व विघ्न-विनाशकेभ्य: सुभिक्ष ऋद्धि-विभव अनेक मंगल-वितरणेभ्य: सर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें भक्तजन भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान।
आत्म अतुल संपत्ति वरे, बारंबार प्रणाम॥
चक्रवर्ति पद पाय फिर, तप धर वन को जाये।
ऋद्धि-सिद्धियां पाये फिर, अघ समूह नशवाये॥

इत्याशीर्वाद:।

चौंसठ ऋद्धि विधान आरती

(तर्ज....वीरा महावीरा स्वामी...)

चौंसठ ऋद्धि के स्वामी, तीर्थंकर गणधर नामी।

हम सब उतारें तेरी आरती-2 ओ गुरुवर हम...........

जंगल पर्वत सरिता तट पर, घोर तपस्या कीनी,

ऋद्धि सिद्धियां दौड़ी आईं, शरण आपकी लीनी, ओ गुरुवर।

तप की शक्ति हम पायें, पूजा को तेरी आयें।

हम सब उतारे...........

बुद्धि ऋद्धि निज ज्ञान को देवे, बल शक्ति को देवे,

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, स्वाभाविक सुख देवे, ओ गुरुवर।

ऋद्धि अतिशय बरसाती, कर्मों को शीघ्र हटाती,

हम सब उतारे...........

ज्यों गुरुवर के दर्शन करते, वश में उनके होते,

पीछे-पीछे जाकर के सब, दुष्ट कर्म को खोते, ओ गुरुवर।

आशीष ऐसा बरसाओ, भक्तों को पास बुलाओ,

हम सब उतारे...........

चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि

चौंसठऋद्धि मंत्र के अनुसार चौंसठ व्रत करना चाहिये। व्रत के दिन उपवास करना उत्तम, अल्पाहार, फल, दूध, मेवा या जल आदि लेना मध्यम और एक बार शुद्ध भोजन करना जघन्य विधि है। प्रत्येक माह में अष्टमी, चतुर्दशी आदि किसी भी दिन व्रत कर सकते हैं। व्रत पूर्ण कर 'चौंसठ ऋद्धि मंडल विधान' का पाठ करके शक्ति के अनुसार चौंसठ शास्त्र उपकरण आदि मंदिर में रखें। अनेक प्रकार की दारिद्रय से छुटकारा पाना इसका फल है। जिस दिन मंत्र का व्रत हो, उस दिन उस मंत्र की जाप करें।

प्रत्येक व्रत का समुच्चय मंत्र

ॐ ह्रीं चतु:षष्टिऋद्धिभ्यो नमः

चौंसठ व्रतों/चौंसठ ऋद्धि के 64 मंत्र

बुद्धि के 18 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं मन:पर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः
4. ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः
5. ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये नमः
6. ॐ ह्रीं पदानुसारिणीबुद्धिऋद्धये नमः
7. ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नमः
8. ॐ ह्रीं दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः
9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धये नमः
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नमः
11. ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नमः
12. ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धये नमः
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः
14. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः

15. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिऋद्धये नमः
16. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः
17. ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः
18. ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः

विक्रिया ऋद्धि के 11 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये नमः
3. ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये नमः
4. ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धये नमः
5. ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये नमः
6. ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धये नमः
7. ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये नमः
8. ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये नमः
9. ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये नमः
10. ॐ ह्रीं अंतर्ध्यानविक्रियाऋद्धये नमः
11. ॐ ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये नमः

चारणऋद्धि के 9 मंत्र

1. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः
3. ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः
4. ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः
5. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः
6. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः
7. ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः
8. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः
9. ॐ ह्रीं मरूच्चारणक्रियाऋद्धये नमः

तपऋद्धि के 7 मंत्र

1. ॐ ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं दीप्ततपःऋद्धये नमः

3. ॐ ह्रीं तप्ततपःऋद्धये नमः
4. ॐ ह्रीं महातपःऋद्धये नमः
5. ॐ ह्रीं घोरतपःऋद्धये नमः
6. ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपःऋद्धये नमः
7. ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपःऋद्धये नमः

बलऋद्धि के 3 मंत्र

1. ॐ ह्रीं मनोबलऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं वचनबलऋद्धये नमः
3. ॐ ह्रीं कायबलऋद्धये नमः

औषधिऋद्धि के 8 मंत्र

1. ॐ ह्रीं आमशौंषधिऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः
3. ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः
4. ॐ ह्रीं मल्लौषधिऋद्धये नमः
5. ॐ ह्रीं विप्रषौषधिऋद्धये नमः
6. ॐ ह्रीं सवौंषधिऋद्धये नमः
7. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः
8. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये नमः

रसऋद्धि के 6 मंत्र

1. ॐ ह्रीं आशीर्विषरसऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं दृष्टिविषरसऋद्धये नमः
3. ॐ ह्रीं क्षीरस्त्राविरसऋद्धये नमः
4. ॐ ह्रीं मधुस्त्राविरसऋद्धये नमः
5. ॐ ह्रीं अमृतस्त्राविरसऋद्धये नमः
6. ॐ ह्रीं सर्पिस्त्राविरसऋद्धये नमः

अक्षीणऋद्धि के 2 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः
2. ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धये नमः

प्रशस्ति

चौपाई

अतिशय ऋद्धि-सिद्धियाँ आती।, जिनको जिनवर पूजा भाती।।
चौंसठ ऋद्धि तप से आये।, तप ही अतिशय को बरसाये।।
चौबीसों तीर्थंकर महिमा।, इन्द्र भी गावें उनकी गरिमा।।
थोड़ा हमने किया प्रयास।, मुझको है मुक्ति की आस।।
बनी भावना, की है भक्ति।, रचा विधान हुई अभिव्यक्ति।।
गाजियाबाद है नगर सुहाना।, माघपूस महीना शुभ जाना।
संवत् बीस सौ है पच्चीस।, 'स्वस्ति भूषण' का जगदीश।।
जो भी भक्ति से करते हैं।, उसके कारज भी सरते हैं।।
ऋद्धि-सिद्धियाँ पास हैं आई।, मुक्ति श्री पाके हर्षाई।।
सुधी सुधार पढ़ो भक्ति से।, नाता जोड़ों तुम मुक्ति से।।

विनम्र निवेदन

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव, गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी द्वारा रचित 'श्री जिनपद पूजांजलि' (नवीन जिनवाणी संग्रह) एक बहुचर्चित कृति है जिसको पूज्य माताश्री ने सरल व सरस शैली में रचकर सकल जैन समाज पर बड़ा उपकार किया है। यह कृति पूज्य माताश्री के ज्ञान की सुरभि चारों दिशाओं में फैला रही हैं। आप किसी भी अवसर पर इस कृति को वितरित कर शास्त्र दान का लाभ ले सकते हैं। प्रचार-प्रसार हेतु सम्पर्क करें श्री स्वस्ति साहित्य प्रकाशन समिति